तृतीय अध्याय

निराला के काव्य में वेदना की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति का स्वरुप।

अभिव्यक्ति की व्यग्रता ही कला के जन्म का मूल कारण है। मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है। उसमें आगे बड़ने की प्रवृति सदैव से विद्यमान है। आदिम युग से ही मनुष्य अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए व्यग्र होता आया है। हम जानते हैं कि भाषा का अविर्भाव भी इसी व्यग्रता का परिणाम है। भाषा के माध्यम से जब वह अपनी अनुभूतियों को अभिव्यक्त नहीं कर पाता, तो वह अन्य साधनों को अपनाता है। मनोंभावों को व्यक्त करने की यही अदम्य और शाश्वत भावना कला की जननी है। मनोंभावों को प्रकाशित करना ही अभिव्यक्ति है। भाषा भावों की अभिव्यक्ति का साधन है। "साहित्यकार अपने अनुभवों आदि को विभिन्न प्रकारों से शाब्दिक आकार प्रदान करता है। यही साहित्यिक अभिव्यक्ति कहलाती है।"1

निराला की वेदना का स्वरुप एक साधारण मनुष्य की वेदना का ही स्पष्ट स्वरुप है। 'राम की शक्तिपूजा' जो निराला की बहुचर्चित कविता है इसमें राम का चरित्र निर्माण कवि ने कुछ इस तरह किया है जिसमें कवि की अपनी व्यक्तिगत वेदना उभर कर सामने आती हुई प्रतीत होता है -

> ''धिक जीवन को जो पाता ही आया विरोध
> धिक साधन जिसके लिए सदा ही किया शोध ।'' 2

'राम की शक्तिपूजा' का मिथकीय नायक राम, निराला की सृष्टि हैं। भारतीय साहित्य

में जो राम काव्य है और उनमें जो राम का चरित्र है, उससे अलग तरह के हैं। निराला के राम अन्य राम काव्यों के राम की तरह अलौकिक चमत्कार और लीलाएँ नहीं करते हैं। वे सामान्य मनुष्य की तरह जीवन की सामान्य से सामान्य परिस्थितियों में विचलित हो जाते हैं। वे विषाद की गहरी पीड़ा झेलते हैं। निराला की वेदना में निखार तब आता हैं जब वे जानते हैं कि वे धर्म के पथ पर हैं, फिर भी एक के बाद एक कष्ट और तकलीफ उन्हें उठानी पड़ रही है। राम की शक्ति पूजा में राम का यह सोचना की रावण अधर्मरत होते हुए भी जीत रहा है और वे धर्मरत होते हुए भी हार रहे हैं, निराला की इसी मनःस्थिति को दर्शाता है।

निराला दुखी हैं कि उन्हें जीवन भर विरोध ही मिला, और इतना ही नहीं प्रिया अर्थात सीता का उद्धार न हो सका। वे सीता को मुक्त न करा सके। यहाँ अगर हम गहराई से विवेचन करे तो ऐसा लगता है कि सीता के उद्धार के माध्यम से निराला भारत माता के उद्धार और नारी मुक्ति की बात कर रहे हैं। हमारे समाज में नारी का स्थान बहुत नीचे है। 'राम की शक्तिपूजा' में रावण समाज का प्रतीक बन कर उभरता है। जिसने नारी के अधिकारों और उसकी स्वायतता का हरण कर लिया है। निराला की वेदना उनके काव्य सरोज स्मृति में भी स्पष्ट हुई है जहाँ वे इस बात को लेकर व्यथित हैं कि वे अपनी कन्या का समुचित पालन-पोषण करने में इसलिए असमर्थ रहे क्योंकि उनके पास समुचित धन न था। ऐसा नहीं कि उन्हें धन उपार्जन करना नहीं आता था, किन्तु उन्ही के शब्दों में -

"लखकर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ समर।" 3

स्पष्ट है कि धन उपार्जन करने के जो पथ थे वे निराला को स्वीकार्य न थे इसी कारण वे जीवन पर्यन्त विपन्न रहे। उनकी विपन्नता के कारण उनके पुत्र और पुत्री को कष्ट उठाने पड़े इससे निराला व्यथित दिखाई देते हैं -

"धन्ये मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित कर न सका।" 4

निराला के निजी जीवन पर नजर ड़ालें तो यही ज्ञात होता है कि निराला का सम्पूर्ण जीवन अनेकों प्रकार की प्रतिकूल परिस्थितियों में गुजरा था। उन्होंने बचपन में मातृ सुख का अनुभव नहीं किया। कुछ बडे होने पर पिता का साया भी उनके सिर से उठ गया। केवल पाँच वर्ष के गृहस्थ जीवन के बाद पत्नी भी उन्हें इस लोक में छोड़ कर परलोक वासिनी हो गई। उसके साथ ही बड़े भाई, चाचा, चाची और एक भतीजी को अपने सामने ही मौत के मुँह में जाते हुए निराला ने देखा। घर के सभी बड़े सदस्य परलोक सिधार गये। उनके सिर पर चार भतीजों और अपने दो बच्चों का भार आ पड़ा। इन विकट और दारुण परिस्थितियों में निराला को चारों ओर अंधेरा नजर आ रहा था। किन्तु वे कहीं भी डगमगाए नहीं। इस क्रूर नियति से निराला पूछते हैं-

''एक भी हाथ सम्भाला न गया
और कमजोरों का बस क्या है
कहाँ-निर्दय, कहाँ है तेरी दया,
मुझे दुख देने में जस क्या है"5

निजी जीवन के दुख के साथ साहित्य जगत में मिली अवमानना भी निराला के जीवन में कम न थी। उनकी रचनाएँ उस समय की बहुचर्चित पत्रिकाओं में बिना छपे वापस आ जाती थी। निराला आर्थिक रूप से हमेशा असहाय रहे। यही कारण है कि निराला में औदात्य और तटस्थता मिलती है वह अन्य कवियों में दुर्लभ है। सरोज स्मृति केवल एक आत्मकथा ही नहीं है बल्कि उसके माध्यम से एक-एक पुरानी रूढ़ियों और आधुनिक अर्थ पिशाचों पर करारा प्रहार है। सरोज स्मृति पंत के उच्छ्वास और प्रसाद के आँसू की वैयक्तिकता से कहीं अधिक आगे है। कवि की महानता वैयक्तिक अनुभवों की

प्रस्तुति में नहीं बल्कि उनसे तटस्थ और निर्वैक्तिक होने में है। पंत की तुलना में उनका काव्य अधिक वस्तुमुखी है।

निराला प्रतिकूल परिस्थितियों से परेशान होकर सोचने लगते थे कि यदि वे राजपुत्र होते या किसी लखपति की संतान होते तो उन्हें इतने कष्ट न उठाने पड़ते। उनका जीवन भी सुखी और सम्पन्न होता। डॉ0 रामविलास शर्मा ने इसी सम्बन्ध में कहा है - "संभव है, उनका जीवन अधिक सुखी होता पर यह निश्चित है कि तब वह तुलसीदास के बाद हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि न होते।" 5 निराला का दुखवाद अत्यंत त्रासदीपूर्ण और पीड़ा से भरा हुआ है किन्तु उनके काव्य में यही दुखवाद सुखवाद में परिणत हो जाता हैं। उनके जीवन के समस्त दुख उनकी कविता में आकर तिरोहित हो जाते हैं। वे दुख को न तो नकारते हैं न विचलित होते हैं और न हीं उनसे पलायन करने की चेष्टा ही करते हैं। वे उन त्रासदी पूर्ण स्थितियों अथवा दुखों को सहज ढ़ंग से स्वीकार करके उससे मुक्त हो जाते हैं।

बेटी के निधन का दुख और उसके साथ ही कवि होने की सुखद अनुभूति इन विरोधी भावों की संयोजना ही सरोज स्मृति नामक कविता को उँचाई पर ले जाती है। जीवन में सुख और दुख का गहरा सम्बन्ध होता है। यह एक मनोवैज्ञानिक सच्चाई है कि दुखद क्षणों में हम सुखद क्षणों को याद करते हैं या यों कहें कि सुखद क्षण अनायास ही याद आने लगते हैं। राम की शक्तिपूजा में जब निराला रावण के हाथों परास्त होते हैं और उन्हें यह भय सताने लगता है कि युद्ध में हार जाने के बाद वे सीता को मुक्त नहीं करा पायेंगें। दुख के इन दारुण क्षणों में उन्हें अपने जीवन का सबसे सुखद क्षण याद आने लगता है जब वे सीता से पहली बार मिले थे।

"ऐसे क्षण अन्धकार घन में जैसे विद्युत
जागी पृथ्वी - तनया - कुमारिका - छवि, अच्युत
देखते हुए निष्पलक, याद आया उपवन।" 6

अन्ततः यही कहा जा सकता है कि व्यक्तिगत जीवन के दुख, निराशा, हताशा और अनास्था साहित्य में सुख, आशा और आस्था में रुपान्तरित हो जाते हैं। यह अत्यंत कठिन परिश्रम और घोर तप का परिणाम है, किन्तु निराला जैसे असाधरण कवि ने ऐसे कठिन कर्म को सभंव कर दिखाया। निराला को अद्वितीय कवि बनाने में उनके अश्रुपूर्ण दुखी जीवन का गहरा संबंध है।

(क) **पात्रों के माध्यम से**

छायावाद की एक प्रमुख प्रवृत्ति व्यक्तिवादिता है। जिसमें प्रेम की स्वच्छन्द अभिव्यक्ति, भावुकता, कल्पना, और नवीन सौंन्दर्य-बोध की रुप छवियाँ हैं। निराला की कविताओं में भी यह प्रवृत्ति मिलती है, किन्तु वे भावना, कल्पना और अनुभूति के धरातल पर ही मानव-मानव और जड़ चेतन को अभेद मानते हैं। इसलिए निराला ने अपने काव्य में समाज के लगभग सभी वर्ग के पात्रों को स्थान दिया है। यहाँ हम एक-एक करके इसे स्पष्ट करने की कोशिश करेंगें -

(क) नारी पात्र - भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता में नारी सदा से पूजनीय रही है। जैसा की मनु स्मृति में कहा गया है-

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सवास्तत्राफलाः क्रियाः।।"7

अर्थात स्त्री की पूजा अवश्य करनी चाहिए ऐसा नहीं करने से मनुष्य की सारी क्रियायें निश्फल हो जाती है। आरंभ में नारी स्वच्छन्द, मुक्त एवं निर्भय थी। लेकिन जैसे-जैसे मानव सभ्यता का विकास हुआ मनुष्य की समाज सम्बन्धी मान्यताएँ बनती एवं बिगड़ती गई और नारी मात्र भोग की वस्तु बन कर रह गई। धर्मशास्त्र काल में नारी की अवस्था कुछ इस प्रकार बताई गई है-

"पिता रक्षति कौमार्ये भर्तारक्षति यौवने।
रक्षन्ति पुत्रा न स्त्री स्वातंत्र्य मर्हति।।" 8

आदिकाल में वीरों को जन्म देने वाली माता मध्यकाल में पशुतुल्य बन कर रह गई। तुलसीदास ने नारी को पशु के समान प्रताड़ना के योग्य कह कर उसे पूर्ण रुप से प्रताड़ित करने में कोई कसर बाकी न रखी है -

"ढ़ोल गंवार शूद्र पशु नारी ।
सकल ताड़ना के अधिकारी।।" 9

नारी शोषण का यह क्रम लगातार चलता रहा। नवजागरण काल में कवियों का ध्यान इस तरफ गया और उन्होंनें नारी को मुक्त करने का प्रयास किया। नारी जो अबतक शोषित एवं उपेक्षित थी उसे सम्मानित करने का महत्त कार्य किया गया। इसी परंमपरा को और अधिक समृद्ध किया छायावादी कवियों ने। जयशंकर प्रसाद जी ने नारी को श्रद्धा का स्थान देने के साथ-साथ पुरुषों को सुखी बनाने में उसके महत्त्व को स्वीकार किया -

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत नग पगतल में,
पीयूष श्रोत सी वहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।"10

प्रसाद तथा अन्य कवियों की तरह निराला ने भी नारी को गौरवान्वित तथा उसकी महत्ता को प्रतिपादित किया है। इस सम्बन्ध में निराला की दृष्टि और अधिक वास्तविक, यथार्थ एवं गंभीर है। निराला ने स्त्री-स्वाधीनता पर नहीं बल्कि स्त्री-स्वच्छन्दता पर बल दिया। स्त्री को समस्त वन्धनों से मुक्त कराने के प्रति उनका दृष्टिकोण अत्यंत भाववादी रहा है। निराला की प्रेयसी और तुलसीदास में स्त्री के जिस स्वच्छन्द रुप का वर्णन किया गया है वह निश्चय ही आधुनिक युग में स्त्री के बदलते हुए दृष्टिकोण का परिणाम है। सदियों से चली आ रही जाति भेद, और वर्ण भेद की सीमाओं को तोड़ने का

प्रयास है -

"दोनों ही हम भिन्न वर्ण,
भिन्न धर्म भाव पर केवल
अपवनाव से, प्राणों से एक थे।" 11

निराला का विचार था कि नारी जबतक मानसिक दृष्टि से पराधीन है तबतक उसकी स्वाधीनता का कोई मतलब नहीं है। इसी वेदना को उन्होंनें अपनी कविता किसान की नई बहु की आखें कविता में प्रतिपादित किया है -

"वे किसान की नयी बहू की आँखें
ज्यों हरीतिमा में बैठे दो विहग बंद कर पाँखें।" 12

यहाँ हरितीमा से तात्पर्य सुख, सम्पन्नता, और एश्वर्य है, जबकि किसान की बहु ने आँखे बंद कर रखी है, जिससे वह बाहर के प्रकाश का दर्शन नहीं कर पाती। स्पष्ट है कि निराला ने नारी के अन्तस्थल में छिपी संभावनाओं की ओर संकेत किया है। वसुधा की यह सजीव कविता और प्रकृति की मनोरम पुत्री नारी को निराला ने अपने काव्य साहित्य में दो धरातलों पर चित्रित किया है। एक भावात्मक और दूसरा प्रत्यक्ष यथार्थ रुप में। भावना के स्तर पर नारी प्रेरणा श्रोत है और यथार्थ में वह पीड़ित और शोषित है। निराला की यह वेदना नारी के विविध रुपों में व्यक्त हुई है।

माता के रुप में नारी - नारी प्रेम और वात्सल्य की साक्षात मूर्ति होती है। प्रकृति ने नारी को सुकोमल बनाने के साथ-साथ उसे मातृत्व के कठोर कर्तव्य को वहन करने की अपार शक्ति भी प्रदान की है। निराला के काव्य में नारी के प्रति आदर और पूज्य भाव ही देखने को मिलता है। निराला ने नारी को आदिशक्ति के विविध रुपों के माध्यम से व्यक्त किया है। नारी के पवित्र स्वरुप को ध्यान में रख कर ही राष्ट्र की कल्पना माता के रुप में

की गई है। निराला ने इसी रुप को भारत-जननी, भारती, सरस्वती, दुर्गा आदि शक्ति से सम्बोधित किया है। निराला की भारती, जय, विजय करे कविता में भारतभूमि के रूप में भारती की कल्पना की है। यही भारती सरस्वती है, ज्ञान की देवी हैं जिसे कवि जग को ज्योतिर्यमय करने का अनुरोध करता है -

"जग को ज्योतिर्यमय कर दो
प्रिय कोमल-पद-गामिनि मन्द-उतर-
जीवनिमृत तरु-तृण-गुल्मों की पृथ्वी पर
हँस-हँस, निज पथ आलोकित कर,
नूतन जीवन भर दो न
जग को ज्योतिर्यमय कर दो।" 13

'पंचवटी प्रसंग-2' में सीता को माता के रुप में आदिशक्ति बताकर सर्वशक्तिशाली कहा है। दुर्गा हमारी संस्कृति में एक ऐसी वीरांगना रह चुकी हैं जिसे रचनाकारों ने काली, रणचण्डी, पार्वती, श्यामा आदि रुपों में वर्णित किया है। निराला ने जीवन की आसुरी प्रवृत्ति के उन्मूलनार्थ और सात्विक मूल्यों की स्थापना के लिए रणचण्डी को ताण्डव नृत्य करने का आह्वान करते हैं -

"एक बार बस और नाच तू श्यामा
सामान सभी तैयार,
कितने हैं असुर, चाहिए कितने तुझको हार
कर मेखला मुण्ड-मालाओं से बन मन-अभिरामा-
****
भैरवी भेरी तेरी झंझा
तभी बजेगी मृत्यु जब लड़ायेगी तुझसे पंजा,
लेगी खड्ग और तू खप्पर,

उसमें रुधिर भरँूगा माँ
मैं अपनी अंजली भर-भर।" 14

देश की पराधीनता से व्यथित निराला देश को मुक्ति दिलाने के लिए चण्डी माता का आह्वान करते हैं। राष्ट्रीयता के परिपेक्ष्य माता का यह रुप निराला के राष्ट्र प्रेम का ही द्योतक है। माता के एक और सहज और स्वाभाविक रुप का वर्णन निराला के काव्य में पाया जाता है, एक ऐसा रुप जो साधारण नारी का सरल गुण होता है। वैसे हर माँ को अपना बच्चा सबसे सुन्दर लगता है फिर चाहे वह बदसुरत ही क्यों न हो निराला ने मातृ हृदय के इसी रहस्य का उद्‌घाटन अपनी कविता 'रानी और कानी' में किया है। माँ अपनी कुरुप, गंजी एवं कानी संतान को भी रानी कहकर पुकारती है और उसके बिबाह एवं अज्जवल भविष्य के सपने संजोती रहती है, किन्तु वास्तविकता उसके चिंता का कारण बन जाती है -

"माँ उसको कहती है रानी
आदर से जैसा है नाम,
लेकिन उसका उल्टा रूप,
चेचक के दाग, काली, नाक-चिप्टी
गंजा सर, एक आँख कानी।"
****
"सोचती रहती है दिन रात
कानी की शादी की बात।" 14

निराला काव्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उन्होंनें आदिशक्ति के विविध रूपों को ही माता के रूप में स्वीकार किया है, साथ ही साधारण नारी की ममता की महत्ता को भी अभिव्यक्त किया है। यह निराला के विशाल और निष्पक्ष हृदय की पहचान है।

बहन के रुप में नारी - भारतीय संस्कृति में बहन का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भाई बहन का सम्बन्ध तो गंगाजल सा पवित्र, चन्द्रमा सा शीतल, बालक सा अबोध और निश्चल होता है। हिन्दु समाज में तो यह सम्बन्ध बहुत ही व्यापक और उच्च धरातल पर प्रतिष्ठित किया गया है। लोक जीवन में कई त्योहार भाई बहनों के सम्बन्ध से जुड़े हुए हैं। रक्षा बंधन, भाई दूज आदि त्योहारों में भाई बहन के पवित्र सम्बन्ध की ही चर्चा होती है। निराला ने भी अपने काव्य में भाई बहन के पवित्र सम्बन्धों को अभिव्यक्त किया है। बहुत दिनों के बाद जब भाई बहन मिलते है तो उस समय उन्हें जो असीम आनंद प्राप्त होता है वैसा ही आनंद 'तुलसीदास' में रत्नावली को अपने भाई से मिलने पर होता है -

"एक दिन बिदा को बन्धु द्वार पर आया,
लख रत्नावली खुली सहास,
अवरोध-रहित बढ़ गयी पास।" 15

निराला ने भातृ प्रेम के आवेश भाव को सहजता से प्रस्तुत किया है। बहन रत्नावली की शारीरिक दुर्दशा से चिंतित भाई का हृदय करुणा से फूट पड़ता है-

"हँसती उदास तू छाया-
हो गयी रतन, कितनी दुर्बल,
चिंता में बहन, गयी तू गल।" 16

निराला दो टूक कहने से कभी न हिचकते थे, उनके पास ईट का जवाब पत्थर था। यहाँ रत्नावली पहले से ही अपने पति से त्रस्त है, इस पर जब भाई उसे अपने घर के हालात और बिरादरी की भर्त्सना से वाकिफ कराता है तो रत्नावली का नैहर प्रेम उमड़ आता है और वह उसी क्षण पति की चिंता किए बगैर अपने भाई के साथ जाने के लिए तैयार हो जाती है -

"बोली वह, मृदु-गम्भीर-घोष,
मैं साथ तुम्हारे करो तोष।
बोला भाई, तो चलो अभी,
अन्यथा न होंगें सफल कभी
हम, उनके आ जाने पर, जी यह कहता
जब लौटें वह, हम करें पार
राजापुर के ये मार्ग, द्वार।
चल दी प्रतिमा। घर अंधकार अब बहता।" 17

यहाँ घटनाक्रम में एक गति है, यह निराला की विशेषता और सौन्दर्य दृष्टि का ही नतीजा है। बहन नैहर प्रेम के आगे पति का घर अंधकार में बहता छोड़ देने में जरा भी संकोच नहीं करती या यों कहा जाए कि उसे इसका जरा भी ध्यान नहीं रहता क्योंकि उसका ध्यान तो नैहर में केन्द्रित होकर रह जाता है। निराला ने "वन कुसमों की शैया" कविता मे बहन का प्रतीक लेकर ऋतुओं को बहनों से सम्बोधित करके उनकी भावनाओं को उजागर किया है -

"सोती हुई सरोज - अंक पर
शरत् - शिशिर दोनों बहनों के
पद्म - पत्र पंखे झलते थे।"19

उपरोक्त कविता मे शरत् , शिशिर और बर्षा को बहनों के रुप में चित्रित किया गया है। शरत् और शिशिर दोनों छोटी बहने सोई हुई हैं। ज्यादा सोना ठीक नहीं इसलिए बड़ी बहन वर्षा उन्हें जगाती है मगर प्यार से क्योंकि वे दोनों छोटी हैं और प्यारी भी।

"बड़ी बहन वर्षा ने उन्हें जगाया-
अन्तिम झोका बड़े जोर से एक,

किन्तु क्रोध से नहीं, प्यार से,
अमल-कमल-मुख देख,
झुक हँसते हुए लगाया-सोते से उन्हें उठाया।" 20

भाई बहन और भहनों के आपसी अटूट एवं पवित्र सम्बन्ध को निराला ने बड़ी सूक्ष्मता के साथ अपने काव्यों में अभिव्यक्त किया है।

नारी पत्नी के रुप में - भारतीय संस्कृति में नारी पत्नी रुप में पुरुष की प्रिया, गृहणी, सहधर्मिता, सन्तानोपादिका आदि अनेकानेक रुपों में आती है। भारतीय संस्कृति के अनुसार नारी पत्नी के रुप में तभी प्रतिष्ठित होती है जब उसका बिबाह समाज मान्य होता है। विवाह के पश्चात नारी पूर्ण रुप से पति के लिए समर्पित रहती है उसके जीवन में पति का स्थान भगवान के समान होता है। बिबाहोपरान्त नारी का जीवन और निखरता है, उसके भाव तरल, कोमल एवं त्यागमय बन जाते हैं। पत्नी पुरुष की प्रेरणा, स्फूर्ति एवं पूर्ति बनकर उसके जीवन को सजाने, सवारने और साथ-साथ जीवन के सुख-दुख को बांटने का कार्य करती है। उसे इसी जीवन में स्वर्गीय आनंन्द की प्राप्ति होती है। पाश्चात्य संस्कृति में पति पत्नी के पारस्परिक सम्बन्ध अवश्य होते हैं परंतु बिबाह की जो गति भारतीय संस्कृति में है वैसा पाश्चात्य संस्कृति में नहीं। भारतीय नारी एक बार जब किसी पुरुष से शादी करती है तो जन्म-जन्मान्तर तक उसी की अर्धाग्नी बनने का वचन लेती है। पाश्चात्य संस्कृति में ऐसा नहीं होता वहाँ विवाह एक कॉण्ट्रेक्ट होता है, जब तक चाहा साथ रहे जब चाहा अलग हो गये। यही कारण है कि उनमें वह स्नेह, आत्मतोष, सहिष्णुता और समर्पण का भाव नहीं रहता जो भारतीय पति - पत्नी में होता है। यही उनके जीवन का मूलाधार है। निराला को भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता से अनुराग है। वे पत्नी के इसी रुप में विश्वास करते है। इसी कारण उनके काव्य में पत्नी के विविध रुप दिखाई देते है। हम जानते हैं कि निराला अपनी पत्नी मनोहरा देवी से बेहद प्यार करते थे मनोहरा देवी ने ही उनके जीवन को नई दिशा, प्रेरणा, एवं स्फूर्ति प्रदान की थी, परंतु नियति ने उनकी प्रिया को असमय ही उनसे छीन लिया निराला इस सदमें

से जल्दी निकल नहीं पाये और कई दिनों तक उनके मानस पटल पर पत्नी की छवि छाई रही। निराला की इसी मानसिकता को स्पष्ट करती हुई कविताएँ हैं - 'प्रिया के प्रति','स्मृति चुम्बन', 'प्रिया से' आदि। जहाँ कवि पत्नी को याद करता है अपने अतीत के सुखों को याद करते हुए पत्नी को पुनः आने का अनुनय करता है। 'प्रिया के प्रति' कविता में निराला के इसी भाव की अभिव्यक्ति को स्पष्ट देखा जा सकता है -

" एक बार भी यदि अजान के,
अन्तर उठ आ जाती तुम,
एक बार भी प्राणों की तम-
छाया में आ कह जाती तुम
सत्य हृदय का अपना हाल
कैसा था अतीत वह, अब यह
बीत रहा कैसा काल।"21

यहाँ पत्नी के प्रति एक निष्ठ प्रेम का जैसा सटीक एवं मार्मिक चित्रण हुआ है वह अपने आप में अतुलनीय है। पत्नी की सौंदर्यशीलता, उसके स्वभाव का चित्रण कवि ने ' उसकी स्मृति' कविता में इस प्रकार किया है-

"मृदु सुगन्ध सी कोमलदल फूलों की,
शशि किरणों की सी वह प्यारी मुस्कान,
स्वच्छन्द गगन सी मुक्त वायु सी चंल,
खोई स्मृति की फिर आई सी पहचान।"22

पत्नी के रुप में नारी पुरुष की सलाहकारिणी एवं हितकारिणी की भूमिका का आजीवन निर्वाह करती है। सही अर्थों में पत्नी ही पति की प्रेरणा स्रोत होती है। निराला भी इस सत्य को स्वीकार करते हुए 'प्रिया से' कविता में लिखते हैं-

"तेरे सहज रुप से रंगकर,
भरे गान के मेरे निर्झर,
भरे अखिल सर,
स्वर से मेरे सिक्त हुआ संसार।"23

पुरुष के लिए नारी का सर्वाधिक विश्वसनीय और स्थायी रुप पत्नी के रुप में ही होता है। शायद यही कारण है कि उसे गृहणी सुगृहणी तथा गृह लक्ष्मी के पद से भी सम्मानित किया जाता है। घर को व्यवस्थित और स्थापित करने की जो क्षमता नारी में होती है वह पुरुषों में नहीं इसलिए कहा जाता है कि - 'बिनु घरनी घर भूत का डेरा।' निराला ने गृहणी के अनेकानेक रुपों का वर्णन किया है दृष्टव्य है -

"यह श्री पावन गृहणी उदार,
गिरि-वर-उरोज सरि पयोधार,
कर वन-तरु, फैला फल निहारती देती,
सब जीवों पर है एक दृष्टि,
तृण-तृण पर उसकी सुधा वृष्टि,
प्रेयसी, बदलती सन सृष्टिनव लेती।"24

स्पष्ट है कि नारी के पत्नी रुप का वर्णन करते समय निराला ने भरतीय संस्कृति से प्रभावित और प्रेरित नारी पर अपनी दृष्टि रखी है तथा उसके विविध रुपों का सजीव वर्णन करने में सफलता प्राप्त की है।

नारी पुत्री के रुप में - नारी जीवन का प्रथम क्रम कन्या का होता है। समाज में इसे पुत्री रुप में जाना जाता है। पुत्री जन्म को समाज में सुभ और अशुभ अवसर अनुसार दोनों ही समझा जाता है। असुभ या बोझ इस कारण माना जाता है क्योंकि हमारे समाज में दहेज जैसी घृणित प्रथा सदियों से चली आ रही है और जो पिता दहेज देने में अक्षम

होते हैं उनके यहाँ कन्या का जन्म लेना अशुभ और पिता के लिए बोझ समझा जाता है। इसके विपरीत भारतीय संस्कृति में और शास्त्रों में कन्यादान को पबित्र माना गया है कन्यादान से ही माता-पिता का जीवन पूर्ण होता है ऐसी मान्यता है। इस कारण पुत्री के जन्म को शुभ भी माना गया है।

हिन्दी साहित्य में पुत्री से सम्बन्धित अनेक कविताएँ लिखी गई जिनमें से अधिकांश कविताएँ दहेज प्रथा को लेकर ही है। अन्य पुत्री के प्रति माता - पिता के स्नेह तथा वात्सल्य से सम्बन्धित है। निराला की एकमात्र शोक गीत के रुप में जानी जाने वाली बहुचर्चित कविता सरोज स्मृति में पुत्री के सभी रुपों का वर्णन सजीवता के साथ कवि ने किया है। कवि को सरोज के बाल स्वरुप का कुछ इस प्रकार स्मरण होता है -

"माँ का मुख हो, चुम्बित क्षण-क्षण,
भरती जीवन में नव जीवन,
खायी भाई की मार, विकल
रोयी, उत्पल-दल-दृग-छल छल,
चुमकारा फिर उसने निहार,
फिर गंगा-तट-सैकत विहार
करने को लेकर साथ चला,
तू गहकर चली हाथ चपला।"25

डॉ. देशराज भाटी के शब्दों में " सरोज स्मृति कवि के करुण हृदय की अपनी बेटी के निधन पर पढ़ी ऋचा है, जिसका स्पर्श कर मन मौत से संघर्ष करने के लिए उद्दत हो उठता है।"26 स्पष्ट है कि सरोज स्मृति सरोज के मरणोपरांत लिखी गई कवि के करुण हृदय की पीड़ा है। डॉ. वेदव्रत शर्मा के अनुसार सरोज स्मृति कविता में कवि ने सरोज का जो सुन्दर वर्ण चित्र खींचा है, और फिर उसे शोक को अर्पित करके जो कला दिखाई है, वह आधुनिक हिन्दी साहित्य की अद्वितीय निधि है।

सरोज के सयानी होने पर उसकी सुन्दरता में आये निखार का निराला ने जो चित्रण किया है वह एक अप्रतिम घटना है। ऐसा लावण्य-मय चित्रण विश्व साहित्य में भी शायद ही कहीं उपलब्ध हो। समाज में प्रचलित रुढ़ियों एवं घृणित प्रथाओं का विरोध कर बिना दहेज दिए सरोज की शादी और उसमें भी स्वंव पुरोहित बनकर उसकी शादी करा देने वाले निराला वास्तव में ही एक विप्लवी प्रकृति के व्यक्ति हैं। दृष्टव्य है -

"तुम करो ब्याह, तोड़ता नियम
मैं सामाजिक योग के प्रथमं,
लग्न के, पढ़ुगा स्वयं मन्त्र
यदि पण्डितजी होंगें स्वतन्त्र।"27

बेटी की बिमारी का इलाज न कर सकने की असमर्थता का कारण उनका धनाभाव है, इस पर कवि दुख व्यक्त करता है। जैसे -

" धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित कर न सका।"28

पुत्री के तर्पण में अपना सबकुछ निछावर करने वाले निराला इसे अपने गत कर्मों का अर्पण से सम्बोधित करते हैं। निराला की एक और रचना जो पुत्री के वात्सल्य से सम्बन्धित हैं वह है - तुलसीदास जिसमे कवि ने माता पिता की व्यथा को रत्नावली के भाई द्वारा निवेदित किया है -

"आँसुओं भरी माँ दुख के स्वर
बोली रतन से कहो जाकर,
क्या नही कुछ मोह माता पर अब तुमको
जामाताजी वाली ममता

माँ से तो पाती उत्तमता।
बापु, योगी रमता मैं अब तो-
कुछ ही दिन को हूँ कुल-द्रुम
छू लूँ पद फिर कह देना तुम।" 29

नारी प्रेयसी के रुप में - शब्दकोष में प्रेयसी शब्द का अर्थ पत्नी या प्रेमिका बताया गया है। परंतु समाज के लिए यह मान्य नहीं है। समाज के लिए तो पत्नी पुरुष की संतुष्ट भार्या, कर्तव्य परायण गृहणी, त्याग, संयम और समर्पण की साक्षात् देवी होती है। जबकि प्रेयसी उन्मुक्त, स्वच्छन्द, उच्छृंखल और कल्पना लोक में विचरण करने वाली सामाजिक बन्धनों से मुक्त आजाद नारी होती है। उसके इसी स्वभाव के कारण समाज उसके सम्बन्ध को पवित्र नहीं मानता जबतक कि उसका विधिवत बिबाह नहीं हो जाता तबतक समाज उसे घृणा का पात्र ही मानता है। आधुनिक समय में इसके मायने बदल रहे हैं। निराला भी यह अनुभव करते हैं कि शास्त्रकारों ने प्रेयसी के अनेक रुपों की चर्चा की है, जिसमें स्वकीया, परकीया और सामान्य का जो चित्रण हुआ है वह आज के सन्दर्भ में बिलकुल बकवास है। उनका कहना है कि, "सती प्रथा की तरह सतीत्व प्रथा के उठ जाने का और कानुन बन जाये तो और-और देशों की महिलाओं की तरह यहाँ की सीता और पार्वती देवियों के भी चित्र देखिए। छिपे तौर पर कितना पाप होता है, यह किसी आँख कान वाले से छिपा नहीं है। मैं जहाँ रहता हूँ उसके एक ही कोस के अन्दर सतियाँ, ससुर, जेठ, भाई और पिता तक के साथ पति सम्बन्ध होने पर कम हिचकीं।" 30 इससे पता चलता है कि निराला समाज का निरीक्षण बड़ी बारीकी से करते हैं और इस कारण उनके काव्य में प्रेयसी का स्पष्ट रुप तलाशना टेढ़ी खीर ही है। किन्तु प्रकृति के मानवीकरण द्वारा उन्होंने प्रेयसी या प्रेमी-प्रेमिका के वाह्य और आन्तरिक दोनो पक्षों को अपने काव्य में सफलता पूर्वक उजागर किया है।

किसी युवा आकर्षक पुरुष के सौंदर्य को देखकर नारी की मनोदशा को निराला कुछ इस तरह व्यक्त करते हैं-

"मिले तुम एकाएक
देख मैं रुक गई
चल पद हुए अचल,
आप ही अपल दृष्टि,
फैला समष्टि में खिंच स्तब्ध मन हुआ।
दिये नहीं प्राण जो इच्छा से दूसरे को,
इच्छा से प्राण वे दूसरे के हो गये
देखती हुई सहज
हो गई मैं जड़ीभूत।" 31

स्वच्छन्दता और निड़रता निराला के काव्य की विशेषता रही है। शायद यही कारण है, कि निराला की रचनाओं में प्रेयसी या प्रियतम को प्राप्त करने के लिए निराला काव्य का प्रियरम या प्रेमी घर-बार सबकुछ छोड़ कर जाने के लिए भी तैयार रहता है। दृष्टब्य है -

"प्यार करती हूँ अलि, इसलिए मुझे भी वे करते हैं प्यार।
बह घई हूँ अजान की ओर, तभी यह बह जाता संसार।
रुके नहीं धनि, चरण घाट पर,
देखा मैंने मरण बाट पर
टुट गये सब आट-ठाट घर,
छुट गया परिवार।"32

प्रेमी-प्रेमिका के लिए गृह-बंधन, समाज-बंधन, जाति-बंधन महत्व नहीं रखते ना ही इन्हें लोक मर्यादा का ही ध्यान रहता है। वे इन सबसे मुक्त अपने लक्ष्य की ओर चलते चले जाते हैं। उन्हें समाज के बनाये नियम ढ़कोसले लगते हैं और वे इसे व्यर्थ मानते हुए अपने लक्ष्य को ही सही साबित करना चाहते हैं -

"दोनों हम भिन्न वर्ण,
भिन्न-जाति भिन्न रुप,
भिन्न-धर्मभाव, पर
केवल अपनाव से, प्राणों से एक थे।
समझे यह नहीं लोग
व्यर्थ अभिमान के।"33

प्रेयसी की मनोदशा का चित्रण निराला ने प्रकृति के मानवीकरण द्वारा किया है। शेफालिका में प्रतिक्षारित प्रेयसी की मनोदशा का चित्रण द्रष्टव्य है -

"जागती प्रिया नक्षत्र-दीप-कक्ष में
वृक्ष पर सन्तरण-आशी आकाश है,
पार करना चाहता
सुरभिमय समीर-लोक,
शोक-दुख-जर्जर इस नश्वर संसार की
क्षुद्र सीमा।" 34

कहा जाता है की परकीया प्रेम में बड़ी तीब्रता होती है। यहाँ अपने प्रेयसी और प्रियतम की सुधि सर्वोपरि होती है और खुद के घर परिवार तथा शरीर की सुधि भी निम्नतर होती है। प्रेयसी को अपने धर की सुध तब आती है जब उसे अपने तन की सुधि शेष रह जाने की अनुभूति होती है।

"जगा देह ज्ञान,
फिर याद गेह की हुई,
लज्जित
उठे चरण दूसरी ओर को,

विमुख अपने से हुई
चली चुपचाप,
मूक सन्ताप हृदय में,
पृथुल-प्रणय-भार।" 35

निराला की ऐसी अनेक रचनाएँ हैं जिनमें प्रेमिका या प्रेयसी को उन्होंनें प्रकृति के आलम्बन रुप में अभिव्यक्त किया है। 'जुही की कली', 'कविता', 'संध्या सुन्दरी', आदि कवि की ऐसी ही रचनाएँ है जिनमें नायिका का प्रकृति के रुप में मानवीकरण किया गया है और बड़ी ही सफलता के साथ किया है।

विविध रुपों में नारी - हिन्दी काव्य में विविध सम्बन्धों के साथ-साथ नारी के विविध रुपों की चर्चा भी होती आई है। इसका आधार नारी के कर्म, गुण, धर्म और उसकी दशा है। निराला के साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि उपरोक्त सभी रुपों को निराला साहित्य में जगह मिली है। जहाँ कवि की अपनी संवेदना उनसे पूर्णरुपेण जुड़ी हुई प्रतीत होती है।

मजदूरिन - हिन्दी साहित्य में कवियों ने नारी के मजदूरिन रुप को विविध प्रकार से अभिव्यक्त किया है। श्रम से थकी हारी, पसीने से तर-बतर चेहरे के सौन्दर्य ने भले ही इन कवियों के शौंन्दर्य लिप्सा को तृप्त न किया हो किन्तु इनके संवेदनशील हृदय को अवश्य ही जगाया और झकझोरा है। 'वह तोड़ती पत्थर' निराला की ऐसी ही भाव प्रवण कविता है, जिसने निराला की संवेदना को अभिव्यक्त किया है। कवि ने पत्थर तोड़ने वाली उस मजदूरिन के अन्तर और वाह्य हृदय को कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त क्या है -

"वह तोड़ती पत्थर,
****

श्याम तन भर, बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
****
देखा मुझे उस दृष्टि से,
जो मार खा रोई नहीं,
****
ढुलक माथे से गिरे सीकर
लीन होते कर्म में फिर यों कहा
में तोड़ती पत्थर।" 36

निरंतर घटते हुए घटनाक्रम जिस तरह किसी फिल्म में सजीवता भर देता है वैसे ही निराला ने मजदूरिन नारी की समस्त पीड़ा और विवशता को मुखरित किया है, उनका यह कहना - **जो मार खा रोई नहीं,** श्रमिक नारी की दीनता को सजीव रुप में अभिव्यक्त करता है। एक तरफ मजदूरिन नारी है जिसे पेड़ की छाया तक नसीब नहीं होती तो दूसरी तरफ महल और अट्टालिकाएँ हैं जिसमें वही शोषक वर्ग है जो मजदूरिन की इस दयनीय दशा के लिए जिम्मेदार है।

विधवा - हमारे देश में नारी की जो दुर्दशा है उसके लिए भारतीय समाज ही जिम्मेदार है। हमारे समाज में खास कर हिन्दु सम्प्रदाय में विधवा नारी की जितनी उपेक्षा हुई है उतनी अन्य सम्प्रदायों में नही। एक शब्द 'विधवा' इसमें इतनी करुणा है कि इसे सुनते ही नारी की समस्त पीड़ा आँखों के सामने दृष्टिगोचर हो जाती है। इस एक शब्द में मानो नारी के जीवन की समस्त पीड़ा सिमट गई हो। सुधारवादियों ने विधवा के जीवन की स्थिति को उभारने के काफी प्रयास किए हैं, किन्तु आज भी विधवा का जावन तिरस्कृत ही है। हिन्दी कवियों ने भी कविता के माध्यम से विधवा नारी की मनोदशा को चित्रित करने

का प्रयास किया है, तथा विधवा जीवन की समस्याओं को पाठकों के समक्ष रखकर उनसे सहानुभूति की अपेक्षा की है। निराला ने तो 'विधवा' शीर्षक से ही उसकी व्यथा को चित्रित किया है। इष्टदेव के मंदिर में प्रज्ज्वलित शांतदीप-शिखा और वृक्ष से पृथक हुई लता के समान दिखने वाली किन्तु समाज से उपेक्षित विधवा की पीड़ा से व्यथित कवि को विधवा की व्यथा एक भूली हुई कथा के समान जान पड़ती है -

"वह इष्टदेव के मंदिर की पूजा सी
वह दीप-शिखा सी शांत भाव में लीन
वह क्रूर काल-ताण्डव की स्मृति रेखा सी
वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन-
दलित भारत की ही विधवा है।" 37

जिस तरह निराला ने भारत की ही *विधवा* कहा है उससे विधवा की करुण स्थिति और समाज में उसकी न्यून्यता स्पष्ट होती है। भारतीय समाज में नारी की असहाय स्थिति का जीता जागता प्रमाण उनकी कविता 'विधवा' से बेहतर और कुछ नहीं हो सकता।

नेत्री - नारी के प्रति निराला का दृष्टिकोण हमेशा उदार और जागरुक रहा है। वे नारी के महिमामयी व्यक्तित्व में विश्वास रखते थे। यही कारण है कि भारत की पहली महिला दब रंगमंच पर आकर अपने विचार और भावों की अभिव्यक्ति का साहस जुटा पाती है तो निराल उसकी प्रशंसा किये विना नहीं रह सके। श्रीमति विजयलक्ष्मी पंड़ित के स्वरुप का एक चित्र दृष्टव्य है-

"जीवन की ज्यों छुटी शक्ति आरक्ति से भरी -
नभश्चुम्बिनी उतरी क्षिति पर किरण की परी,
पार कर रही थी प्रांगण विश्व की अनुवर

अर्जित यौवन में मार्जित जीवन भर-भरकरर
मुखरा प्रिय के संग तीसरा प्रहर दिवस का,
मरुद्यान में यान तुम्हारा रुका विवश सा
उतरी तुम संग-संग प्रिय, उस रंगमंच पर।" 38

घटना के माध्यम से - संसार के प्रत्येक व्यक्ति के साथ सुखात्मक या दुखात्मक घटनाएँ घटती है, साहित्यकार भी इस संसार का ही हिस्सा है और उसके जीवन में ऐसी घटनाएँ घटना भी स्वाभाविक है। साहित्यकार के पास लेखनी रुपी माध्यम है जिससे वह अपने साथ हुई घटनाओं को काव्य या कथा साहित्य के माध्यम से पाठकों तक पहुँचा सकता है। निराला ऐसे साहित्यकार है जिनके जीवन में ऐसी अनेकों घटनाएँ है जिसको उन्होंनें कविता का विषय बनाया और पाठकों तक पहुँचाया।

घटना से यहाँ हमारा तात्पर्य सिर्फ साहित्यकार के निजी जीवन से सम्बन्धित घटना ही नहीं बल्कि उसके आस-पास और समाज में घटने वाली घटनाओं से भी है। सफल साहित्यकार अपने आस-पास घटने वाली घटनाओं को अपने काव्य का विषय बनाता है।

तत्कालीन पराधीन भारत में अंग्रेजी साम्राज्यवाद का घोर दमनकारी रुप सर्वत्र फैला हुआ है। भारत शोषित और दुखी है। यमुना के प्रति कविता में निराला इसी शोषित और दुखी भारत की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक अवस्था का चित्रण करते हैं -

"किस दुर्गम गिरि के कन्दर में
डूब गया जग का निःश्वास
उतर रहा अब किस अरण्य पर
दिनमनणि - हीन अस्त आकाश।"39

पराधीनता की नियति रुपी संध्या सुख वैभव रुपी संसार पर उतर आयी है और उसने सुख के समस्त साजों को समेट दिया है। अब केवल अंधकार ही अंधकार है। निराला काव्य में पराधीनता के कारण वर्तमान का अंकन करने वाले दृश्यों में अंधकार की प्रधानता है। भविष्य का अंकन करने वाले दृश्यों में स्वतन्त्रंता की अभिलाषा के कारण प्रकाश की प्रधानता है -

"आँखे अलियों सी किस मधु
की गलियों में फँसी,
बंद कर पांखे पी रही मधु मौन
या सोयी कमल कोरको में
बन्द हो रहा गुंजार --
जागो फिर एक बार।"40

ऐसा माना जाता है कि छायावादी कवियों को अतीत के प्रति मोह रहा है और वे अतीत की गौरवशाली घटनाओं को काव्य का विषय बनाते हैं। इन कवियों ने अतीत के वैभव, सुख-समृद्धि और शौर्य के चित्रण के माध्यम से राष्ट्रीय और सांस्कृतिक जागरण को अभिव्यक्ति दी है। निराला भी इसके अपवाद नहीं हैं - महाराज शिवाजी का पत्र अतीती गौरव के चित्रण की दृष्टि से निराला की एक महत्वपूर्ण कविता है। इसमे जयसिंह एक ऐसे उद्यान रुपी भारत का नायक है जिसमें विभिन्न जातियों के पुष्प-पत्र-दल भरे हुए हैं -

"बहु-जाति, क्यारियों के पुष्प-पत्र-दल-भरे
आन-बान-शानवाला भारत-उद्यान के
नायक हो रक्षक हो,
वासन्ती सुरभी को हृदय से हरकर,
दिगन्त भरने वाला पवन ज्यों।"41

जयसिंह उस पवन के समान है जो वासंती सुरभी को दिगंत में भरने वाला है इसके ठीक विपरीत बाबर के बंश की राज्यलक्ष्मी दुपहर के धुफ के समान प्रखर है। बाबर की राज्य सत्ता का चित्रण करते हुए कवि कहता है -

"दुर्मद ज्यों सिन्धुनद
और तुम उसके साथ
वर्षा की बाढ़ ज्यों
भरते हो प्रबल वेग प्लावन का।"42

दुसरे महायुद्ध का समय निराला के प्रयोंगों का समय रहा। इस काल में हमारे देश में बहुत सारी ऐसी घटनाएँ घटी जिन्होंने निराला के मन मस्तिष्क पर प्रभाव ड़ाला। बंगाल में ऐसा अकाल पड़ा जैसा संसार के इतिहास में कभी देखा -सुना न गया था। सन 42 में अंग्रेजी राज्य ने कांग्रेसी नेताओं को जेलों में ठूस दिया और जनता पर दमनकारी नीतियों का जमकर प्रयोग किया। युद्ध में सोवियत संघ की विजय हुई और फासिस्ट राज्यों के गढ़ टूटने से समाजवादी क्षेत्र में ऐसा विस्तार हुआ। बहुत दिनों तक हमारा राजनीतिक जीवन अस्त-व्यस्त रहा। हिन्दी लेखकों पर युद्ध के संकट का गहरा प्रभाव पड़ा। कुछ ने तो इन दिनों लिखना ही बंद कर दिया था, कुछ में पुराने निराशावादी विचारधारा सिर उठाने लगी थी। कुछ लोग नये-नये प्रयोग करने लगे थे। ऐसे संकट के समय जनता में विश्वास रखकर सही मार्ग चुनना बड़ा कठिन कार्य था। युद्ध काल का यह प्रभाव अनेक रुपों में निराला की कविताओं में भी देखा जा सकता है। युद्ध के आरंभिक समय में उन्होंने कुछ व्यंगात्मक कविताएँ लिखी, इसमें कुकुरमुत्ता की विशेष चर्चा हुई। अबतक किसी ने भी कुकुरमुत्ता जैसी नगन्य वस्तु पर लिखने का विचार भी नही किया था। लोगों में इस बात को लेकर मतभेद रहा की आखिर निराला कुकुरमुत्ता नामक कविता के माध्यम से किस पर व्यंग करना चाहते हैं।

कुकुरमुत्ता में कविता में कुकुरमुत्ता और गुलाब के बीच होने वाले नोक-झोक का वर्णन है। जिसमें गुलाब पूँजीपति वर्ग का और कुकुरमुत्ता मजदूर वर्ग का प्रतिक है। निराला कुकुरमुत्ता के माध्यम से गुलाब पर तीव्र व्यंग करते हैं, जिसमें तत्कालीन भारतीय राजनीति एवं सामाजिक व्यवस्था को लक्ष्य बनाया गया है -

"अबे सुन बे गुलाब,
भूलमत जो पाई खुशबू, रंगों आब,
खून चूसा खाद का तुने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा है कैपिटलिस्ट।
काँटों से ही भरा है यह सोच तू।"43

कवि ने भारतीय परवेश और काव्य पद्धति की तुलना टी. एस. इलियट की काव्य शैली से की है। इलियट के दूरादेशी संदर्भ-गराही काव्य पक्ष पर निराला ने चोट की है -

"कहीं का ईट कहीं का रोड़ा,
टी. एस. इलियट ने जैसे दे मारा,
पढ़नेवालों ने भी जिगर पर रखकर
हाथ, कहा, लिख दिया जहाँ सारा।"44

समाज और देश की आम बाँते कहने के बदले उन्होंने विशेष घटनाओं पर कविता लिखी। उन्होंने बताया कि लेखक का स्थान जनता के साथ है, जनता के सुख-दुख, आशा निराशा, विद्रोह और विजय का चित्रण करके ही साहित्यकार अपनी बाणी को सफल बना सकता है।

इस प्रकार की अनगिनत घटनाओं को माध्यम बना कर निराला ने काव्य सृजन किया इतना ही नहीं बल्कि उन घटनाओं के माध्यम से देश की जनता के सुख-दुख को जोड़ा।

आम जनता के सुख-दुख से जुड़ कर ये घटनाएँ राष्ट्रीयता का स्वरुप ग्रहण करती है।

प्रकृति चित्रण के माध्यम से - प्रकृति का मनुष्य से गहरा सम्बन्ध सृष्टि के आरंभ से ही रहा है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ यह सम्बन्ध और गहरा होता गया। आरंभ में प्रकृति मनुष्य के भीतर आतंक पैदा करती थी लेकिन धीरे-धीरे विज्ञान के विकास के साथ मनुष्य तथा प्रकृति के सम्बन्धों मे परिवर्तन आता गया। आज प्रकृति के प्रति हमारा प्रेम बढ़ गया है। प्रकृति और काव्य का सम्बन्ध अभिन्न है। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति को देवता का काव्य कहा है - "पश्य देवस्य काव्यं न विमेति न रिष्यति।" "इस विविध रुपात्मक जगत की अभिव्यक्ति का आधार काव्य है। प्रकृति के अनन्त रमणीय प्रसार मे काव्योपयोगी असीम सौन्दर्य, अगाध माधुर्य, अगणित, रंजनकारी ध्वनियां, आकर्षक वर्ण, रुप, आकृतियाँ भरी पड़ी हैं। रुप माधुर्य के इस अक्षय भंड़ार से काव्य अपने को सदा श्रीसम्पन्न रखता है।"45 डॉ. रामविलास शर्मा ने भी लिखा है कि, "क्या भारत क्या यूरोप कहीं भी अब तक कोई बड़ा मानव प्रेमी कवि नहीं हुआ जो प्रकृति का भी प्रेमी न रहा हो।"46

हिन्दी साहित्य में द्विवेदी युग से लेकर परवर्ती काव्य में प्रकृति चित्रण की प्रधानता तो हमेशा रही है परंतु छायावादी कवियों के यहाँ प्रकृति के संश्लिष्ट बिम्ब मिलते हैं। छायावादी कवियों का इन्द्रियबोध सघन है, संश्लिष्ट है घुला मिला है। दुसरे स्वच्छन्दतावादी कवि प्राकृतिक दृश्यों से मन पर पड़नेवाले प्रभाव को कहते चलते हैं- वाह कैसै सुन्दर पुष्प है इत्यादि। छायावादी कवियों का भावबोध गहरा है वह मन पर पड़ने वाले प्रभाव को सीधे-सीधे कथन के माध्यम से व्यक्त नहीं करते अपितु उस प्रभाव को व्यंजित करते हैं। छायावादी कवियों ने मनुष्य और प्रकृति के सम्बन्ध को निकटता प्रदान की है, वे एक दूसरे से गहरे रुप में जूड़े हुए हैं। इसलिए छायावादी प्रकृति अधिक चेतन है।

पं. रामनरेश त्रिपाठी ने प्रकृति का यथार्थपूर्ण चित्रण किया है। प्रत्येक प्राकृतिक वस्तु का जैसे का तैसा चित्र उभारा है -

"बार-बार बक पंक्ति गगन से उज्जवल फूलों वाली।
मेघ पुष्प बर्षा से धूमिल घटा क्षितिज पर काली.
लहराती दृग की सीमा तक धानों की हरियाली।
वारिज नयन गगन छटी दर्शक सर की छटा निराली।
कोकिल का आलाप, पपीहे की विरहाकुल बानी।
तोता मैना का विवाद, बुल-बुल की प्रेम कहानी।
विमलोपक पुष्कर में विकसे चित्रविचित्र कुसुम हैं।
खड़े चतुर्दिक शांत भाव से ललिकालंगित द्रुम हैं।"47

इस कविता में प्रकृति के समस्त चित्रों का विस्तार हैं, परंतु संश्लिष्टता का आभाव है। इसका कारण है वस्तुओं का अलग-अलग कथन अर्थात अभिव्यक्ति की प्रणाली। प्रकृति के सभी रंग होने के बावजुद इसमें कसाव और गहराई का अभाव है क्योंकि सब अलग-अलग हैं। इसलिए परस्पर टकराव के द्वारा किसी संश्लिष्ट बिम्ब की सृष्टि नहीं करते।

"कहीं-कहीं किंचित हेमाभ भरे खेतों पर
रह-रह श्वेत बक - आमा लहराती है ।
उमड़ी-सी-पीली भूरी हरी द्रुम-पुंज घटा
घेरती है दृष्टि जो दूर दौड़ती आती है।
उसी में विलीन एक और धरती ही मानो
घरों के स्वरुप में उठी सी दृष्टि आती है।"48

इस दृश्य में भी दृष्टि का फैलाव है। यहाँ दृष्टि खेतों पर से होती हुई फैली हुई द्रुम पुंज से टकराकर नीचे उतरती है और फिर घरों पर रुक जाती है। फैलाव के अनुरुप ही दृश्यों में उतार चढ़ाव होता है। पूरे के पूरे दृश्य में दृष्टि इधर-उधर दौड़ती फिरती है कहीं भी ठहरकर दृश्य में प्रवेश नहीं करती। हरे-भरे खेतों के चारों ओर रंग-विरंगे पेड़

और इसी में कहीं-कहीं बने हुए घर - एक सुन्दर मगर यथार्थ पूर्ण दृश्य आँखों के सामने आता है।

छायावादी कवियों ने प्रकृति के विराट और संश्लिष्ट बिम्ब अपनी कविता में उकेरे हैं। छायावाद राष्ट्रीय जागरण का काल है और इसी की काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी। ज्यों-ज्यों इस जागरण का विकास हुआ त्यों-त्यों उसकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति भी विकसित होती गई है। राम की शक्तिपूजा का एक प्रकृति चित्र -

"शत घूर्णावर्त तरंग भंग उठते पहाड़,
जल राशी-राशी जल पर चढ़ता खाता पछाड़
तोड़ता बंध फ्रतिसंध धरा, हो स्फीत-वक्ष
दिग्विजय - अर्थ प्रतिपल समर्थ बढ़ता समक्ष।
शत - वायु वेग-बल डुबा अतल में देश-भाव,
जलराशि विपुल मथ मिला अनिल में महाराव
वज्रांग, एकादशरुद्र क्षुब्ध कर अट्टाहास।"49

यह प्रकृति का विराट रुप है। समुद्र का व्यापक और विस्तृत जल तरंगों का पहाड़ के रुप में पछाड़ खाता हुआ, पवन और महाराव को अपने में मिलाता हुआ। पृथ्वी और आकाश को एक कर उसे जलमय बना रहा है। चित्रों की यह विराटता स्वतंत्रता की प्रखर प्यास को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। यहाँ प्रकृति के पाँचों तत्व एक दूसरे में घुले मिले हैंष इसलिए यह प्रकृति का क्रियात्मक और संश्लिष्ट बिम्ब है। महादेवी भी प्रकृति के विराट चित्र की सृष्टि करती हैं -

"अवनि अंबर की रुपहली सीप में
तरल मोती सा जलधि अब कांपता
तैरते घन मृदुल हिम के पुंज से
ज्योत्स्ना के रजत पारावार में।"50

जब पंत कहते हैं कि -

"विहंगम सा बैठा गिरि पर
सुहाता है विशाल अंबर।"51

तो वे अपनी विराट चित्रों की सृष्टि करने वाली शक्ति का परिचय देते हैं।

निराला ने समस्त परंम्पराओं को तोड़कर काव्य को निराला ने जिस प्रकार नवीन कलेवर प्रदान किया है उस दृष्टि से प्रकृति चित्रण में भी नवीन प्रयोंगों का परिचय भी उनके काव्य में निरंतर मिलता रहा है। कहीं मधुर, कहीं भयानक, कहीं प्रेमी, कहीं प्रेयसी, कहीं इश्वर आदि अनेक रुपों में प्रकृति को निराला ने सहज ढ़ंग से अभिव्यक्त किया है। प्रकृति की भावनाओं संवेदनाओं की अभिव्यक्ति यही निराला की मौलिक विशेषता है। अनेक स्थानों पर प्रकृति -प्रकृति है, मानव नहीं पर उसकी काल्पनिक पटल पर प्रभावित करने वाली संवेदनशीलता उसे मानव की श्रेणी में ले आती है। यही प्रयोग निराला की 'राम की शक्तिपूजा' में मिलता है। काव्य का प्रारंभ ही प्रकृति उपासना से हुआ है -

"रवि हुआ अस्त, ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया, राम रावण का अपराजेय समर।"52

यहाँ सूर्य का अस्त होना सामान्य विषय नहीं है अपितु सूर्य के अस्त होने के साथ ही मानों राम का तेज भी कम हो गया है क्योकि आज के युद्ध में राम विजयी नहीं हुए।

निराला की अन्य कविताओं में भी नवीन उपमानों को नवीन रुप में प्रस्तुत किया गया है -

"तुम तुंग हिमालय श्रृंग और मैं चंचल गति सुरसरिता।"53

यहाँ जीव और ब्रम्ह की एकता को प्रकृति और जीव से जोड़ कर अभिव्यक्त किया गया है। उन्होंने मानव मन की सुकोमल कल्पनाओं अभिलाषाओं को भी प्रकृति के रुप में साकार किया है-

"बादल छाये,
ये मेरे अपने सपने
आँखों से निकले, मंडलाये।"54

निराला ने यत्र-तत्र कविताओं को आत्म कथ्य के रुप में अभिव्क्त किया है। जीवन की जटिलता विषमता और परिताप का उपवान भी प्रकृति है -

"मैं अकेला देखता हूँ
आ रही मेरे दिवस की संध्या बेला।" 55
****
"स्नेह निर्झर बह गया है।
रेत ज्यों तन रह गया है।"56

"ग्रामीण जीवन में प्रकृति का अधिक महत्व है। वन्य और ग्रामीण दोनों प्रकार के जीवन प्राचीन हैं, दोनों पेड़ पौधों, पशु पक्षियों, नदी नालाओं और पर्वत मैदानों के बीच व्यतीत हैं, अतः प्रकृति के अधिक रुपों के साथ सम्बन्ध रखते हैं।"57 इस प्रकार ग्रामीण जीवन का चित्रण भी एक प्रकार से प्रकृति चित्रण का ही एक रुप है। वर्षा के बाद, आसमान के खुलने और धुप के निकलने का ग्रामीण जीवन के क्रिया कलाप पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका वर्णन करते हुए निराला कहते हैं -

"बहुत दिनों बाद खुला आसमान।
निकली है धूप, हुआ खुश जहान।

दिखीं दिशाएं, झलके पेड़,
चरने को चले ढोर-गाय-भैंस-भेड़,
लड़कियाँ घरों को कर भासमान।"58

''निराला के काव्य में प्रकृति सौंदर्य का अनुपम चित्रण हुआ है। इस सौंदर्य चित्रण का अपना विशिष्ट प्रकृति दर्शन है, जिसमें प्रकृति, शक्ति और माया अभिन्न हैं। पार्वति शक्तिरुपा है और प्रकृति भी पार्वति ही है। जब पार्वति हरी भरी चेतन प्रकृति है, तब शिव शवमात्र उस प्रकृति के आधार।"59 शक्तिरुपा पार्वति ही चेतन प्रकृति है। राम की शक्तिपूजा में यही हरी भरी चेतन प्रकृति शक्ति है -

"देखो बन्धुवर सामने स्थित जो यह भूधर
शोभित शत-हरित-गुल्म-तृण से श्यामल सुन्दर,
पार्वति कल्पना है इसकी.........................।"60

'तुम और मैं 'कविता में ब्रम्ह और माया के सम्बन्ध निरुपण के क्रम में माया स्वयं को प्रकृति और शक्ति भी कहती है -

"तुम शुद्ध सच्चिदानन्द ब्रम्ह
मैं मनोमोहिनी माया।

और

तुम स्वेच्छाचारी मुक्त पुरुष,
मैं प्रकृति प्रेम जंजीर।
तुम शिव हो मैं हूँ शक्ति।"61

निराला काव्य में माया के दो रुप चित्रित हैं - विद्या माया और अविद्या माया। विद्या माया का सम्बन्ध सौंदर्य और सृजन से है, अविद्या माया का सम्बन्ध विनाश और भ्रम से है। 'माया' कविता में माया सुन्दर प्रकृति बन-संवरकर नृत्य करती हुई चंचल नायिका है और साथ ही 'किसी बन की विषम बन बल्लरी' भी है। यह संसार का नियम है इसमें सुख और दुख दोनों सदैव साथ-साथ चलते रहते हैं। इस माया का सम्बन्ध अंधकार और रम्यता दोनों से है-

"शीत की नीरस निठुर तू भागिनी
या वसन्त-विभावरी की रम्यता।"62

'अधिवास' कविता में इसी माया का सम्बन्ध गति और मानवीय करुणा से है-

"फंसा माया में हूँ निरुपाय,
कहो, कैसे फिर गति रुक जाय।"63

निराला के काव्य में पतझड़, बसंत, ग्रीष्म आदि ऋतुओं का चित्रण मिलता है। डॉ. बच्चनसिंह के अनुसार "बसंत निराला की अत्यधिक प्रिय ऋतु है.......अतः प्रकृति चित्रों में बासंती दृश्यों की बहुलता है।"64

बंगाल की शस्य-श्यामला धरती और महीषादल की घनघोर बर्षा ने निराला को आरंभ से ही आकर्षित किया था यही कारण है कि निराला की कविताओं में बर्षा और बसंत से सम्बन्धित रचनाएँ अधिक हैं। बादल राग शीर्षक की छः कविताएँ इसी का संकेत करती हैं। निराला की रचनाओं में बर्षा का विशिष्ट महत्व है। काले-काले बादलों के आगमन से आसमान में बिजली की चकाचौध, बादलों की गड़गड़ाहट, रिम-झिम बरसती बर्षा की धाराएँ, बादलों को देख कर नृत्य करते मोर, सरोबरों में खिलते कमल, मंद-मंद शीतल हवा का कोमल स्पर्श ऐसे अनगिनत दृश्य हैं जिसे निराला ने अपने काव्य में शब्दबद्ध किये हैं -

''छाये बादल काले-काले
मँडराये, आये, मतवाले।
****
घुमड़-उमड़-घन
सावन आये।
मन-मन के
मनभावन आये।
मोर शोर करते हैं वन में,
नाच रहे हैं फिर निर्जन में,
दादुर की रट भी छन-छन में,
विपुल बलाक की धावन आये।
बूँदों की रिम-झिम फुहार है,
पवन-अवनि, फिर-फिर बुहार है,
खगकुल की पुलकित गुहार है,
पुर के पाहुन पावन आये।''65

वर्षा के प्रभाव से वन-उपवन, पशु-पक्षी, बालक, बृद्ध सभी प्रभावित होते हैं। निराला इसका अति सूक्ष्मता से अवलोकन और वर्णन करते हैं -

''बिजली कौंध रही है छन-छन
काँप रहा उपवन-उपवन
चिड़ियाँ नीड़-नीड़ में निःस्वन,
सरिता-सजलता तिर आयी।''66
****
''बालों को क्रीड़ा प्रवाल है,
युवकों को तनु, कुसुम माल है,

वृद्धों को तप, आलबाल है,
छुटा-मिला जब-ध्यान तुम्हारा।''67

वर्षा के रौद्र रुप से भले ही वन, उपवन, बच्चे, बुड़े एक बार कंपित होते हों परंतु इसी से वे आनन्दित भी होते हैं। गाँवों में वर्षा का विशेष महत्व होता है। वर्षा ही ग्राम जीवन के आनन्द का आधार है इसी से उनके जीवन में उल्लास आता है। जब भी बर्षा के आभाव में फसले नष्ट होने लगती है तो वह बादलों से निवेदन करता है कि वे बरसे और धरती तथा उनके फसलों की प्यास बुझायें -

''धान, जुआर, उड़द, अरहर, घन
धारण कर-कर हरसो नव घन।''68

निराला ने लगभग अपने सभी काव्य संग्रहों में बर्षा से सम्बन्धित कविताएँ लिखी है इससे उनके बर्षा के प्रति अनुराग की पुष्टि होती है।

निराला को बर्षा के बाद सबसे प्रिय बसंत ऋतु लगती है। बसंत ऋतु के प्रति भी निराला का उतना ही अनुराग और आकर्षण रहा है। "बसंत ऋतु के प्रति उनकी गहरी रागात्मक अनुभूति रही है। वसंत पंचमी को अपना जन्मदिन मानना उनकी वसंत प्रियता का उदाहरण है।"69 संख्या की दृष्टि से वसंत ऋतु पर निराला ढ़ेरों कविताएँ हैं। 'सखि वसंत आया' शार्षक कविता में निराला ने वसंत के आगमन पर प्रकृति के अनुपम दृश्यों की बड़ी सूक्ष्मता और सजीवता के साथ वर्णन किया है -

''सखि वसंत आया ।
भरा हर्ष नव के मन
नवोत्कर्ष छाया ।
किसलय वसना नव वय लतिका

मिली मधुर प्रिय-उर-तरु-पतिका,
मधुप-वृन्द बन्दी-
पिक-स्वर नभ सरसाया।
लता-मुकुल-हार-गंध-भार भर,
वही पवन बन्द मन्द मन्दतर,
जागी नयनों में वन-
यौवन की माया ।
आवृत सरसी -उर-सरसिज उठे,
केशर के केश कली के छुटे
स्वर्ण शस्य-अँचल
पृथ्वी का लहराया।''70

वसंत के आगमन पर चारों ओर हरियाली छा जाती है। भौरें गुँजार करने लगते हैं, तालाब में कमल खिल उठते हैं। सुगंधित वयार से वातावरण पवित्र लगने लगता है। कोयल की आवाज गूँज उठती है, आँखों में यौवन का आकर्षण छा जाता है। फसलें पक जाती है। पृथ्वी पकी फसलों से स्वर्ण जैसी प्रतीत होती है। इन सारी बाँतों का कवि निराला ने बड़ी खुबी के साथ इस कविता में वर्णन किया है। निराला की एक अन्य कविता 'जुही की कली' में निराला यौवन की उन्मतता का वर्णन करते हैं। उनके अनुसार वसंत में प्रकृति अपने सौन्दर्य एवं खुशबू से मानवता में उमंग पैदा कर उसमें मादकता की ललक उत्पन्न करती है जहाँ जवाँ दिल एक दूसरे से मिलने के लिए आतुर होते है -

''वासंती निशा थी ,
****
नायक ने चुमें कपोल,
डोल उठी वल्लरी की लडी जैसे हिण्डोल
इस पर भी जागी नहीं

चूक छमा माँगी नही,
निद्रालस बंकिम विशाल नेत्र मुंदे रही -
किंवा मतवाली थी यौवन की मदिरा पिये,
कौन कहे ...."71

यहाँ कवि ने प्रकृति का मानवीकरण द्वारा प्रणय क्रीड़ा का सजीव चित्रण किया है। वसंत से प्रभावित नायिका के मन में प्रिय मिलन की इच्छा को कवि कली के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

निराला वसंत की रात का वर्णन करते हैं जिसमें प्रेमी जन उन्मत्त रहते हैं। प्रेमी प्रणय की चरम बिन्दु तक पहुँच जाते हैं, जहाँ उन्हें अपने तन-मन की भी सुध नहीं रहती -

''मधु ऋतु रात, मधुर अधरों की पी मधु सुध-बुध खोली,
खुले अलक, मुँद नये पलक दल, श्रम सुख की हद होली-
बनी रति की छबि भोली।''72

इतना ही नहीं निराला ने वसंत को ऋतुपति कह कर सम्बोधित किया है -

''हार गले पहना फूलों का
ऋतुपति सकल सुकृत-कूलों का
स्नेह सरस भर देखा उर सर
स्मरहर को वरेगी।''73

निराला के काव्य में वर्षा और वसंत की तरह शरद ऋतु का भी वर्णन तो है, लेकिन उतनी मात्रा में नही। "शरद का चित्रण भी निराला ने एक पूरक ऋतु के रुप में ही किया

है। शरद ऋतु उन्हें विशेष आकर्षित करती नहीं दीखती।"74 फिर भी निराला नें शरद ऋतु के जो चित्र खीचें हैं वे लाजवाब है। वर्षा के बाद शरद ऋतु का यह चित्र द्रष्टव्य है -

''शुभ्र शरद आयी अम्बर पर,
बड़ी रात कमलों पर सर-सर।
हरसिंगार के फूल प्रातः को
बिछे रश्मि से लजी-गात, ओ,
शीर्ण हो चलीं नदियाँ, झरने,
बदले वेश जनों ने घर-घर।
शांत हो चली निशा और कुछ
रब्बी की खेती बढ़ी पौर कुछ।"75

खिला आसमान, सरोवर में खिले फूल, फूलों से लदी हरसिंगार की डाली, नदियों में क्षीण होता जल, मतलब प्रकृति का सर्वत्र बदला हुआ रुप कितना मोहक है। साथ ही ठंढ़ से सिकुड़ते हुए लोगों की स्थिति का कवि ने कुछ इस तरह वर्णन किया है -

''साधारण जन ठिठुरे,
रहे घरों में जैसे हों,
बागों में गिठुरे।
छिना हुआ घन, जिससे
आधे नहीं वसन तन
आग तपकर
पार कर रहे हैं गृह-जीवन ।"76

ठंढ़ से बेहाल लोगों ने अपने को घरों में बंद कर लिया है और आर्थिक स्थिति से

त्रस्त लोग अधनंगे बदन अपने को ठंढ़ से बचाने के लिए आग तापकर उससे बचने का संघर्ष कर रहे हैं। निराला प्रकृति का मानवीकरण करते हुए यह दिखाते हैं कि ठंढ़ से एक तरफ लोगों की स्थिति बेहाल है तो दूसरी तरफ किसान अपनी फसलों को देख कर प्रसन्न हो रहा है-

''मटर-पुष्प की सौरभ घन से,
लुटी हुई तुम,
सरसों के पीले पुष्पों की
साड़ी पहने।''77

उक्त कतिपय उदाहरणों के अतिरिक्त भी अनेक कविताओं में निराला ने प्रकृति को नवीन प्रतिमानों के रुप में चित्रित किया है। उन्होंने शिशिर ऋतु, ग्रीष्म ऋतु आदि का भी सुन्दर वर्णन किया है। उनकी कविताओं में प्रकृति कभी वर्णनात्मक, कभी मनोदशा का प्रस्तुति करनेवाली, कभी संवेदना में सराबोर है। कवि ने प्रकृति के मौलिक रुप और गुणों को कहीं भी और कभी भी परिवर्तित करने का प्रयास नहीं किया है। प्रकृति की प्राकृतिक छटा स्वभाविक रुप में ही विद्यमान रहती है। प्रकृति का नैसर्गिक स्वरुप ही काव्य को सारगर्भित और अर्थगर्भित बनाने में सफल रहता है, और निराला ने अपने काव्य में यही प्रयास किया है।

भक्ति भावना के माध्यम से - निराला की कविताओं में भक्ति एवं दर्शन प्रारंभ से अन्त तक देखने को मिलता है, किन्तु प्रथम उपाख्यान में भक्ति की तुलना में दर्शन अधिक दृष्टिगत होता है। दूसरे उपाख्यान में भक्ति का पक्ष अधिक प्रबल हो गया है। निराला के काव्य और जीवन पर 'स्वामी विवेकानन्द' और 'रामकृष्ण मिशन' का प्रभाव है। विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित 'नवोदित वेदांत' में अन्तर्निहित अद्वैत दर्शन का प्रभुत्व निराला में छाया हुआ है -

''जग कर एक देखा तार।
कंठ अगणित देह सप्तक,
मधुर स्वर झंकार।
बहु सुमन बहुरंग निर्मित एक सुन्दर हार,
एक ही कर से गुँथा उर एक शोभा भार।
गन्ध शत अरविंद-नन्दन विश्व बव्दन-सार,
अखिल उर रंदन निरंजन एक अनिल उदार।''78

निराला ने अपना पहला निबन्ध संग्रह श्री स्वामी सारदानन्दजी महाराज को समर्पित किया है और लिखा है - 'भगवान श्री रामकृष्ण देव के पद को प्राप्त कर मेरे मनोराज्य के सत्य, शिव और सुन्दर आचार्य श्रीमत स्वामी सरदानन्दजी महाराज की स्नेह दृष्टि को सभक्ति प्रबंध पद्य।' निराला में भक्ति भावना प्रबल थी और इसका प्रमाण उन्होंनें स्वंय दिया है - 'बचपन में ही ऐसे संस्कार बन गये थे कि सन्तों और ईश्वर पर भक्ति हो गई थी। सो जाने पर स्वप्न में देवता आते थे और उनसे लम्बी बातचीत चलती थी।' सारदानन्दजी से इन्होंनें कहा कि स्वप्न में देवता आते हैं। एक दिन दोपहर को सोते हुए देखा कि सारदानन्दजी ध्यान में मग्न हैं। वे कमलासन पर बैठे हैं. आँखे मुदीं हैं और चेहरे पर एक दिव्य ज्योति छाई हुई है। पृथ्वी की सारी चीजें उपर उठती हुई मालूम होती है। इसी ध्यान की अवस्था में एक सन्यासी उनके सामने रसगुल्ले लाया ध्यान में होते हुए भी उन्होंने निराला की ओर इशारा किया और सन्यासी ने रसगुल्ले का कटोरा निराला के सामने रख दिया। खुद खाने के बदले वे जाकर एक रसगुल्ला स्वामी जी को खिला आये। इसके बाद नींद खुल गई। उन्होंने महाज्ञान का प्रत्यक्ष प्रमाण देखा।

'तुलसीदास' में स्थूल प्रेम सूक्ष्म और ईश्वरीय प्रेम में बदलते हुए दिखाकर निराला ने अपनी भक्ति भावना का ही परिचय दिया है। स्त्री की फटकार सुनने के बाद तुलसीदास को अपनी पत्नी में सारदा का रुप नजर आने लगा। काम भस्म हो गया। अपने दामपत्य जीवन का अंतिम वाक्य कहा - 'तुमने जो प्रकाश दिया है, उससे अब घर में रहने का

तनिक भी अवकाश नहीं। मैंने इस समय जीवन का जो व्रत लिया है, उससे इस ओर फिर कभी देखूँगा भी नहीं।' 'राम की शक्तिपूजा' में राम के रुप में शक्ति की साधना करने का भी यही उद्देश्य है कि शक्ति की उपासना से ही मोह माया के बंधनों से मुक्ति और जीवन संग्राम में शक्ति मिलती है।

'निराला की कविताओं में शैव दर्शन से सम्बन्धित कल्पनाएं मिलती है। जिस प्रकार दर्शन का एक तात्विक पक्ष होता है उसी प्रकार प्रत्येक दर्शन का एक व्यवहार पक्ष भी होता है। इस तात्विक पक्ष में व्यवहार पक्ष का विलय हो जाता है और कविता के अन्तर्गत यह विलयन कवि की अनुभूति के बीच निस्तृत होता है। व्यवहारिक पक्ष ही कर्म में साधना पक्ष बन जाता है। इन दोंनों रुपों को मिलाकर साहित्य में एक तीसरे पक्ष का उदय होता है। जिसमें तत्कालिक देशकाल का भी प्रभाव पड़ता है। निराला ने शैव दर्शन की पारिभाषिक शब्दावली का यत्र-तत्र प्रयोग किया है। उनकी कुछ कविताएँ ऐसी हैं जिनसे शैव दर्शन की मान्यताएँ स्पष्ट होती हैं। उपर शैव दर्शन विवेचन में पशु को जीव की कोटि का माना गया है और वह पशु ही जब अहंकार से बंधा होता है तो वह क्षुद्र कोटि का होता है और जब पाश से मुक्त हो जाता है तब शिव स्वरुप हो जाता है। इसी को निरंजन भी कहा गया है और इसकी प्राप्ति योगमार्ग से भी बताई गई है। माया पशु को शिव के पास ले जाने में व्यवधान उत्पन्न करती है।'79

''पशुओं से सहःकुल सन्तुल जग,
अहंकार के बांध बंधा मग,
नहीं डाल भी जो बैठे खग,
ऐसे तल निस्तार करो हे।
विपुल काम के जाल बिछाकर,
जीते हैं जन-जन को खाकर,
रहूँ कहाँ मैं ठौर न पाकर
माया का संहार करो हे।''80

शिव इस ब्रम्हांड के देवता हैं और महायोगी भी। योगी अपनी साधना के माध्यम से मुक्ति प्राप्ति के अभिलाषी होते हैं। यह सारा संसार माया मोह के बंधनों में बंधा है और बंधा ही रहता है। माया के वश में संसार बिना कारण कार्य में लीन रहता है और इश्वर की माया का कोई अन्त नहीं। इस बंधन से मुक्त होने के लिए साधक साधना करता है। मुक्ति प्राप्ति ही उसका उद्देश्य बन जाती है -

''पावक-पकाश पाश दिगंत बंधा है,
अग-जग जैसे अड़क सधा है,
सुषमा में सुख-रुप बंधा है,
नभ में नयन मुक्ति मंडलाई।''81

अपनी आस्तिक भावना का निवेदन उन्होंने अपनी कविताओं में स्थान-स्थान पर किया है। कहीं स्तुति के रुप में, तो कहीं स्तवन में और कहीं काव्य के मंगलाचरण की आशा से। निराला भी निर्गुनिया साधुओं की तरह इस संसार की भव बाधाओं से मुक्ति के लिए सबद कहते हैं -

''तप के बंधन बांधो-बांधो
मन के साधन साधो-साधो।''82

निराला ने भक्ति के क्षेत्र में जिन-जिन देवी देवताओं का स्मरण किया है वह अद्वैत भाव से प्रेरित होकर तथा संसार की माया से व्यथित होकर। निराला ने शैव दर्शन अपनी कल्पनाओं को रुचि अनुसार अपने काव्य में स्थान दिया है। शिव की विचित्रता के अनेकों कहानियाँ भक्तों में प्रचलित है। साहित्य में कवियों ने शिव की विशाल और विराट कल्पना प्रस्तुत की है। निराला ने भी शिव के रुप को अपनी कविता में कल्पना का विषय बनाया है। उन्होंने शिव के दोनों सगुण और निर्गुण रुप को प्रस्तुत किया है।

प्रतीक विधान के माध्यम से - आधुनिक आलोचना में प्रतीक एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है और उसी के माध्यम से काव्य की आत्मा तक पहुँचने का प्रयास किया जाने लगा है। प्रतीक विकसित सामाजिक चेतना के उद्घाटक होते हैं और मनुष्य के समस्त जीवन ही किसी-न-किसी रुप में प्रतीकाश्रयी हैं - प्रतीक हमारी शिक्षा के , संस्कार , के , अनुशासन के, बल संचय के साधन हैं। जीवन में प्रतीक का एक जंगल है। आरुप भी प्रतीक है, मातृभूमि भी प्रतीक है, राष्ट्र भी प्रतीक है, झंडा भी प्रतीक है, जाती और वर्ण प्रतीक हैं, छुआछुत प्रतीक है, दाढ़ी-चोटी प्रतीक है, तिलक और सिन्दुर , फूल और चंदन, धोती और पैंट, टोपी, टोप और पगड़ी, राज्य भाषा, मातृभाषा बोली ये भी प्रतीक है। प्रतीक कवि की अनुभूति को अभिव्यक्त करने का महत्वपूर्ण और सशक्त माध्यम है।

प्राकृतिक प्रतीक - निराला जी ने प्रस्तुत और अप्रस्तुत क्रियाओं वस्तुओं और भावनाओं के लिए प्रतीक ग्रहण किए हैं -

"मेरे दिवस की सान्ध बेला।
पके आधे बाल मेरे
हुए निष्प्रभ गाल मेरे
चाल मेरी मंद होती आ रही है।"83

प्रतीकात्मकता के लिए आमतौर पर सार्वभौमिक वस्तुओं का चयन किया जाता है। सार्वभौमिक रुप या वस्तुएं हमें प्रकृति से प्राप्त होती है और इन प्राकृतिक वस्तुओं से सभी परिचित होते हैं। इसलिए जब ऐसी वस्तुओं या रुपों के माध्यम से किन्हीं भावों - विचारों की ओर संकेत किया जाता है तो वे अपने व्यापक अर्थ में सर्वसाधारण में सम्प्रेषित हो जाती हैं। निराला ने प्रतीकात्मकता के लिए प्रकृति के ऐसे ही सार्वभौमिक-सर्वदेशीय रुपों, व्यापारों और वस्तुओं का चयन किया है।

निराला काव्य में प्रयुक्त प्रकृति के रुप है - सागर, सूर्यास्त, सूर्योदय, चाँदनी,

अंधकार और प्रकाश, चाँद, वृक्ष, बादल, पवन, बर्षा, अग्नि, दाह, गिरि-कन्दर, निर्झर, बर्फ,जंगल, कमल, पशु, वसंत आदि। निराला ने इन प्रतीकों का प्रयोग मौलिक अर्थ में भी किया है और परम्परागत अर्थ में भी -

"देखता मैं प्रकृति चित्र -
अपनी ही भावना की छायाएं चिर - पोषित।"84

प्रकृति के चित्र में अपनी भावना की छवि देखना ही उसका प्रतीक प्रयोग है, किन्तु निराला की भावनाएं निहायत निजी नहीं है। उनकी भावनाएं युग से सम्बन्धित है। उनकी कविताओं में युगीन यथार्थ की अभिव्यक्ति होती है -

"मैंने मैं शैली अपनायी,
देखा दुखी एक निज भाई।"85

उनके 'मैं' में बंधु-बांधवों का सुख-दुख शामिल है। यह मैं दुखी सर्वसाधारण को अभिव्यक्त करता है। यही कारण है कि जब वे प्राकृतिक रुपों, वस्तुओं का प्रतीकवत प्रयोग काव्य में करते हैं तो उनमें युग और जन-जीवन का यथार्थ चित्र अभिव्यक्त होता है।

निराला द्वारा प्रयुक्त परंम्परागत प्रतीक मौलिक अर्थ देते हैं। जब वे परंम्परागत भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं तो प्रतीक परम्परित अर्थों से ही युक्त होता है। अंधकार और प्रकाश का प्रयोग परम्परागत अर्थों में किया गया है -

"देवि तुम्हें क्या दूं
स्वंय बढ़ा दो ना तुम करुणा प्रेरित अपने हाथ
अंधकार उर को कर दो रवि किरणों का प्लुत प्रात।"86

इस कविता में अंधकार और प्रकाश आध्यात्मिक अर्थ लिए हुए है। अंधकार मन

का अज्ञान है और प्रकाश चेतना। देवि प्रकाश पुंज है जो अपने ज्ञान रुपी प्रकाश से जनता के मन का अज्ञान दूर कर उसके चेतना रुपी प्रकाश से आलोकित कर सकती है। निराला के काव्य में अंधकार और प्रकाश इसी अर्थ में प्रयुक्त नहीं होते वरन् उनके द्वारा सामाजिक उत्थान-पतन भी सांकेतिक होता है। 'राम की शक्तिपूजा', 'जागो फिर एक बार', 'तुलसीदास', 'महाराज शिवाजी को पत्र' आदि कविताओं में अंधकार और प्रकाश राजनीतिक और सामाजिक उत्थान पतन को संकेतिक करता है। इन कविताओं में अंधकार पराधीनता का प्रतीक है और प्रकाश उस पराधीनता से से मुक्त होकर स्वाधीनता के स्वरुप का। कहीं-कहीं अंधाकार सामाजिक विषमता की भी अभिव्यक्ति करता है -

"आज अमीरों की हवेली,
किसानों की होगी पाठशाला,
धोबी, पासी, चमार, तेली
खोलेंगे अंधेरे का ताला।"87

इस कविता में अंधेरा सामाजिक विषमता का प्रतीक है। इस सामाजिक विषमता को किसान और अन्य निम्न जाती के साधारण जन संगठित प्रयास से दूर कर सकते हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि अंधेरा पहले आध्यात्मिक अज्ञान के अर्थ में, फिर देश की पराधीनता के अर्थ में और आगे चलकर सामाजिक विषमता के अर्थ में निराला के काव्य में प्रयुक्त होता है। इसी तरह पवन का भी विकास प्रतीकार्थ रुप में निराला काव्य में होता है। 'जुही की कली' में पवन प्रेमी का प्रतीक है। लेकिन आगे चलकर निराला ने पवन का प्रयोग उत्पीड़क के अर्थ में किया है - "पवन पीड़ित-पत्र सा।"

निराला जैसे-जैसे जन-जीवन की ओर उन्मुख होते जाते हैं, जैसे-जैसे जन-जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करने को अग्रसर होते जाते हैं वैसे-वैसे उनके काव्य में प्रयुक्त प्रतीकार्थ बदलता और विकसित होता जाता है। डॉ. रामविलास शर्मा उनकी प्रतीक योजना

के सम्बन्ध में लिखते हैं - "निराला की प्रतीक योजना चाहे सचेत रुप से संयोजित की गई हो, चाहे अचेत रुप से, वह यथार्थ की विरोधी नहीं है।"88

प्रतीक योजना यथार्थ विरोधी तब होती है जब वह जन-जीवन के यथार्थ से भिन्न मन के रहस्यों तथा कल्पना से सम्बद्ध होती है और वह बाह्य यथार्थ का दामन बिलकुल छोड़ देती है। निराला की प्रतीकात्मकता बाह्य यथार्थ से अभिन्न रुप से जुड़ी रहती है। इसलिए निराला की प्रतीक योजना कभी भी यथार्थ विरोधी नहीं लगती। जीवन में कोई भी वस्तु सदा एक जैसी नहीं रहती इतना ही नहीं वह एक दूसरे से भिन्न ही नहीं परस्पर विरोधी भी होती है। ये अर्थ उसके संदर्भों में होता है। संदर्भों पर ध्यान देने से ऐसा लगता है कि निराला काव्य में एक ही प्रतीक भिन्न-भिन्न अर्थों में तथा परस्पर विरोधी अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। जैसे 'जलद' या 'बादल' इन प्रतीकों का प्रयोग निराला काव्य में अनेक अर्थों में हुआ है। 'जलद के प्रति' कविता में जलद देशभक्ति से परिपूर्ण व्यक्ति का प्रतीक है और पवन देशद्रोही है, वह जलद का शत्रु है -

"पवन शत्रु ने तुम्हें उतरते देख
उड़ाया पथ - अम्बर,
पर तुम कूद पड़े, पहनाया
मां को हरा वसन सुन्दर,
धन्य तुम्हारे भक्ति भाव को।"89

इस तरह अगर देखा जाय तो निराला - काव्य में प्रसंग के अनुरुप प्रतीकों का अर्थ बदल जाता है, क्योंकि वे वस्तुनिष्ठता पर बल देते हैं। "यदि वस्तुनिष्ठता या सम्पूर्ण चित्र अथवा दृश्य पर बल न हो तो खविता में एक ही वस्तु भिन्न प्रतीकार्थ नहीं दे सकती, वह हमेशा एक ही सुनिश्चित अर्थ देगी। दृश्य की सम्पूर्णता पर बल देने के कारण ही निराला काव्य में प्रतीकार्थ दुरुह नहीं होने पाते । रुप या वस्तुएं जिस अर्थ में प्रयुक्त की गई हैं, वे आसानी से उसी अर्थ में ग्रहण की जा सकती हैं। इनके प्रतीक जटिल हो सकते

हैं, दुरूह नहीं। काव्य में प्रयुक्त प्रतीक जटिल होंगें जटिल जीवन स्थितियों को व्यक्त करते समय, लेकिन वे दुरूह होंगें अपनी अस्पष्टता, दृश्य की अपूर्णता और संदर्भ हीनता के कारण। निराला काव्य में प्रतीक संदर्भों के साथ आते हैं।"90 निराला की संवेदना जब घनीभूत होती है तो वे एक ही कविता में बहुत सारे प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। " निराला की प्रतीक योजना यथार्थवादी मूर्तिविधान की विरोधी नहीं, उसी के आश्रित होकर सार्थक होती है।"91

सांस्कृतिक प्रतीक- संस्कृति मानवीय चेष्टाओं से निर्मित मानवीय कृति है। प्रकृति मानवीय कृति नहीं है। उसमें उर्जा है पर विवेक नहीं, वह अन्धी शक्ति है अंधी इस अर्थ में क्योंकि वह प्रतिकुल और अनुकूल दोनों है। इसी प्रकृति के उपादान ग्रहण कर मानव उसे अपने अनुकूल बनाता है। मानव के अनुकूल निर्मित प्रकृति ही संस्कृति कहलाती है। द्विवेदी जी के अनुसार - 'असंयत प्रकृति का नाम ही विकृति है और संयत प्रकृति का नाम संस्कृति है'92

निराला को भारतीय संस्कृति से विशेष मोह था। यही कारण है कि उनकी कविताओं में सांस्कृतिक प्रतिकों का प्रयोग दिखाई देता है -

"यमुने तेरी इन लहरों में
किन अधरों की आतुल तान
पथिक प्रिया सी जगा रही है
उस अतीत के नीरव गान।"93

निराला हमारे समुचे देश को सांस्कृतिक परिवेश में देखते हैं। भारती प्रकृति रुपा है इसलिए 'कनक शस्य कमल' धारण किए हुए है। जौ, गेहुँ, धान, आदि की लहराती फसलें देश की सम्पन्नता के प्रतीक हैं -

"भारतभूमि, जय विजय करे।
कनक-शस्य-कमल धरे।
लंकापदतल शतदल
रार्जितोर्मि सागर-जल,
धोता शुचि चरण जुगल
स्तव कर बहु - अर्थ - भरे।"94

निराला के अनुसार सांस्कृतिक समृद्धि आर्थिक समृद्धि के जुड़ी हुई है। आर्थिक समृद्धि के बिना सांस्कृतिक समृद्धि नहीं हो सकती। तभी तो निराला ने कहा कि भारत लक्ष्मी विश्व बाजार की वस्तुओं से प्रेम करने वाली है -

"जागो जीवन धनिके,
विश्व-पण्य-प्रिय वणिके।"95

निराला का मानना है कि इसी आर्थिक समृद्धि के अभाव में भारत केवल दुख भार बना हुआ है -

"दुख भार भारत तम केवल,
वीर्य सूर्य के ढ़के सकल दल,
खोलो उषा - पट निज कर अयि,
छवि मयि , दिन - मणिके।"96

किसान और संस्कृति के गहरे सम्बन्ध को निराला ने अपने काव्य में बड़ी सफलता से अभिव्यक्त किया है। देवी सरस्वती कविता में ज्ञान की प्रतीक देवी किसान की हरी भरी खेती की प्रतीक बन कर आयी हैं। डॉ. रामविलास का कहना है- "देवी रुप में भारत माता की वंदना बहुतों ने की है, परंतु महावीर और सरस्वती में भारत को देखना निराला का

काम है। निराला के लिए स्वाधीनता का अर्थ धनीं वर्घों की खुशहाली नहीं है, इसलिए भारत रुपा देवी सरस्वती में उन्हें किसान जीवन के दृश्य दिखाई देते हैं।"97

निराला अपनी साहित्यक - सांस्कृतिक परंपरा का उल्लेख 'यमुना के प्रति' कविता में करते हैं- 'इसमें सूर काव्य की साहित्यिक विषयवस्तु के वर्णन के माध्यम से अपनी प्राकृतिक सम्पदा का उल्लेख किया गया है। कविता में आगे चलकर 'हरि मृग के निर्वैर विहार' और 'काले नागों से मयूर का बंधुभाव' के द्वारा विस्मृत बंधुभाव की फिर से स्मृति है। 'पावस की प्रगल्भ धारा' और 'कुंजों के कारागार' के माध्यम से अतीत के सुख-सौंदर्य का स्मरण है।'98

दरअसल निराला के मन-मस्तिष्क में भारत की परिकल्पना सिर्फ भौगोलिक सीमा ही नहीं बल्कि भारत उनके लिए एक सम्पूर्ण सांस्कृतिक इकाई है। भारत की इस सांस्कृतिक इकाई की तुलना नहीं हो सकती और ना ही उसे मिटाया जा सकता है, जो वावजुद अनेक झंझावातों और असमानताओं के अड़िग और अमिट है। इसलिए हमें लगता है कि उनकी भारत की कल्पना अधिक महत्वपूर्ण है।

आत्म-प्रसंगों के माध्यम से- रामकृष्ण मिशन ने निराला को अद्वैतवादी बनाया। और निराला के अंदर एक अंतर्द्वन्द्व का जन्म हुआ, यदि संसार मिथ्या है तो इनकी सेवा में व्यर्थ मन क्यों लगाया जाय इसी मानसिक संघर्ष का चित्र उनकी 'अधिवास' कविता में देखने को मिलता है।

परिमल में ऐसी बहुत सी रचनाएँ हैं जिनमे अद्वैतवाद को चुनौती दी गई है। 'भिक्षुक', 'दीन' आदि कविताओं में उसी करुणा को उभारा गया है। 'जीवन चिरकालीन क्रन्दन' कविता में जीवन की कटुता और प्रखर वेदना गीत बन गई है। हिन्दी कविता में ऐसा उत्कट आत्मनिवेदन 'विनय पत्रिका' के बाद पहली बार आया था। अद्वैतवाद और संन्यास से प्रेम होने के बाद भी निराला की रचनाओं में उनके व्यक्तित्व की चर्चा भी काफी

रहती है। अपने जीवन के दुख को माया कह कर वे टाल नहीं देते वरन् वह उस दुख से प्रेरित होकर बहुत ही प्रभावपूर्ण पंक्तियाँ निर्मित करते हैं -

"मेरा अंतर बज्र कठोर
देना जी भरसक झकझोर
मेरे दुख की गहन अन्धतम
निशि न कभी हो भोर
क्या होगी इतनी उज्ज्वलता
इतना वन्दन अभिनन्दन
जीवन चिरकालिक क्रन्दन।"99

निराला के जीवन में आत्म-वेदना सिर्फ जीवन के दुखद स्थितियों के कारण ही व्यक्त नहीं हुई बल्कि साहित्यिक दुनिया में प्रवेश पाने के लिए जो कष्ट उन्होंने उठाये उसकी अभिव्यक्ति भी हुई है -

"लौटी रचना लेकर उदास,
ताकता हुआ मैं दिशाकाश,
बैठा प्रान्तर में दीर्घ प्रहर,
व्यतीत करता था गुन-गुन कर,
सम्पादक के गुण यथाभ्यास,
पास की नोचता हुआ घास,
अज्ञात फेकता इधर-उधर,
भाव की चढ़ी पूजा उनपर।"100

'परिमल' की बहुत सी रचनाएँ हैं जहाँ इसी तरह की आत्म-वेदना व्यक्त हुई है।

हिन्दी की एकमात्र प्रसिद्ध शोकगीत 'सरोज स्मृति' है, जिसमें कवि की आत्म-वेदना को स्पष्ट देखा जा सकता है। कवि ने इस कविता में पुत्री सरोज के जन्म से लेकर उसकी मृत्यु तक के समय को क्रमानुसार छंदबद्ध किया है। इस कविता में उन्होंने अपने जीवन की दुर्वलताओं, असफलताओं और अपने प्रति सम्पादकों की अवमाननाओं का वर्णन किया है। रामविलास शर्मा लिखते हैं - 'कविताएँ छापना संचालकजी कवि पर अपार अनुग्रह करना समझते थे। 'मैंने निराला को बनाया' सभा समाज में उनका यह दावा था। ' तुलसीदास' कविता छपने पर उन्होंने यह शिकायत भी की कि 'सुधा' की बिक्री कम हो गई। मुझे याद है 'बनवेला' पर निराला जी को पारिश्रमिक मिला था लेकिन तब तक सरोज का दुखान्त नाटक समाप्त हो चुका था। 'सरोज स्मृति' की हर पंक्ति में यह भाव बोलता है कि मैं पुत्री के लिए कुछ न कर सका।'101

सरोज की जीवन गाथा कवि निराला की अपनी जीवन गाथा लगती है, जिसमें कवि का व्यक्तिगत दुख, उनकी रचनाओं को संपादकों द्वारा लौटा दिया जाना और इस तरह साहित्यिक जीवन की निराशा, और फिर धीरे-धीरे अर्थोपार्जन कर पाने की असमर्थता से उत्पन्न निराशा, फिर कन्या का पालन-पोषन कर पाने की असमर्थता यह सब इस कविता की भावभूमि है। इस कविता में निराला का व्यक्तित्व हताश, पराजित फिर भी संघर्षरत और जीवन्त दिखाई देता है।' कवि ने स्पष्ट शब्दों में यह नहीं कहा कि कन्या की परिचर्या के लिए अर्थाभाव रहा। वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते मानों लेखनी जबाब दे जाती है। वह सहसा कविता को समाप्त कर देते है। जो कहा और अनकहा रह गया, दोनों से इस कविता में ऐसा तिक्त और यथार्थ सत्य अंकित किया गया है कि व्यक्तिगत जीवन सम्बन्धी रचनाओं में वह रचना सहज ही उँचे से उँचा स्थान प्राप्त कर लेती है।'102

निराला की आत्म-वेदना चाहे जितनी भी त्रासदी और पीड़ापूर्ण क्यों न हो पर काव्य में आकर वह सुखवाद में बदल जाता है, इसका कारण यह है कि वे दुखद स्थितियों को नकारते नहीं न ही उससे पलायन करते है। वे उन दुखद और त्रासदी पूर्ण स्थितियों को सहज ढ़ंग से स्वीकार करते हैं, और उससे मुक्त हो जाते हैं। अगर देखा

जाये तो निराला अपनी कविताओं के द्वारा ही मुक्त हुए हैं। उनके जीवन की सारी पराजय, सारे दुख, सारी निराशा, सारी असफलताएँ उनके काव्य में आकर विलीन हो जाती है।

निराला अपने कवि होने पर भी गर्व करते हैं -

'मैं कवि हुँ,
पाया है प्रकाश'103

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1) निराला के काव्य का समीक्षात्मक अध्ययन, डॉ. मेजर नारायण राऊत, विद्या प्रकाशन कानपुर - 2007, पृ. 187

2) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 337

3) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 315

4) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 315, 316

5) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 34

6) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 312

7) भगवान देव यादव, निराला काव्य का वस्तुपरक अध्ययन, प्र. सं. पृ. 186

8) भगवान देव यादव, निराला काव्य का वस्तुपरक अध्ययन, प्र. सं. पृ. 186

9) भगवान देव यादव, निराला काव्य का वस्तुपरक अध्ययन, प्र. सं. पृ. 189

10) जयशंकर प्रसाद, कामायनी, प्रथम संकलन, पृ. 5

11) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 163

12) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 363

13) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 187

14) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 85

15) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 37, 38
16) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 296
17) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 296
18) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 298
19) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 86
20) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 87
21) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 202
22) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 70
23) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 99
24) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 291
25) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 317
26) डॉ. देशराज भाटी, निराला और उनकी अपरा, प्र. सं. पृ. सं. 285
27) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 322
28) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 315

29) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 297

30) निराला प्रबन्ध प्रतिमा(सामाजिक पराधीनता) पृ. 97

31)सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 325, 326

32) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 217

33) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 328

34) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 142

35) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 326

36) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 342, 343

37) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 74

38) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 87

39) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 120

40) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 137

41) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 146

42) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 146

43) महाकवि निराला के दीर्घ प्रगीत, डॉ. रामकुमार सिंह, साहित्य रत्नालय कानपुर - प्र. सं. 1990, पृ. 89

44) महाकवि निराला के दीर्घ प्रगीत, डॉ. रामकुमार सिंह, साहित्य रत्नालय कानपुर - प्र. सं. 1990, पृ. 89

45) रामेश्वर लाल खण्डेलवाल तरुण, कविता में प्रकृति चित्रण, पृ. 2, 3

46) डॉ. रामविलास शर्मा, नयी कविता और अस्तित्ववाद, पृ. 249

47) पं. रामनरेश त्रिपाठी, पथिक, पृ. 38

48) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मधुस्रोत, पृ. 39

49) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 312

50) परिक्रमा, महादेवी वर्मा, साहित्य भवन, इलाहाबाद, पुस्तकालय संस्करण षष्ठ।

51) सुमित्रानन्दन पंत, पल्लव, राजकमल प्रकाशन, नौवा संस्करण 1988, पृ. 66

52) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 329

53) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 49

54) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 37

55) निराला, गीतिका (भारती जय विजय करे) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1998, पृ. 101

56) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 63

57) आचार्य शुक्ल - रस मीमांसा, पृ. 207

58) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 340

59) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 6, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 160

60) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 317
61) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 37, 38
62) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 32
63) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 36
64) बच्चन सिंह, क्रान्तिकारी कवि निराला, नन्दकिशोर एण्ड सन्स, तृतीय संस्करण, पृ. 197
65) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 213
66) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 212
67) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 405
68) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 214
69) डॉ. मंजुला जैन- पंत एवं निराला के काव्य का तुलनात्मक अध्ययन पृ. 213
70) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 253, 254
71) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 241
72) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 226
73) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 227

74) श्री दूधनाथ सिंह-आत्महन्ता आस्था, पृ. 271
75) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 466
76) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 194
77) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 193
77) निराला, गीतिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 1998, पृ. 24
79) डॉ. सत्यनारायण अग्निहोत्री, निराला काव्य में कल्पना सौष्ठव, साहित्य निलय कानपुर 2007, पृ. 243
80) निराला, अर्चना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 1995, पृ. 23
81) निराला, अराधना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली 1998, पृ. 40
82) निराला, अराधना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली 1998, पृ. 39
83) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 47, 48
84) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 160
85) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 34
86) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 95
87) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 162
88) डॉ. रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1981, पृ. 326
89) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 54

90) रेनुबाला, निराला काव्य में प्रकृति, संजय प्रकाशन दिल्ली, प्र. सं. 2009, पृ. 175
91) डॉ. रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1981, पृ. 331
92) हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली, पृ. 219
93) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 115
94) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 88
95) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 242
96) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 242
97) डॉ. रामविलास शर्मा, निराला की साहित्य साधना भाग - 2, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1981, पृ. 545
98) रेनुबाला, निराला काव्य में प्रकृति, संजय प्रकाशन दिल्ली, प्र. सं. 2009, पृ. 173
99) रामविलास शर्मा, निराला, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., प्रथम संस्करण 2007, पृ. 35
100) डॉ. रामकुमार, महाकवि निराला के दीर्घ प्रगीत, साहित्य रत्नालय, कानपुर, 2009, पृ. 188, 189
101) रामविलास शर्मा, निराला, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., प्रथम संस्करण 2007, पृ. 99
102) रामविलास शर्मा, निराला, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा. लि., प्रथम संस्करण 2007, पृ. 101
103) सं. नन्दकिशोर नवल, निराला रचनावली, भाग - 1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली - 2006, पृ. 296